# केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग

# भारती

अष्टम् अंक

हमारी धरोहर, हमारा साहित्य

## हिंदी विशेषांक

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

भारती

मुख्य संरक्षक
श्रीमती निधि पाण्डेय
आयुक्त, के.वि.सं., नई दिल्ली

संरक्षक
श्री देवेन्द्र कुमार द्विवेदी
उपायुक्त, के.वि.सं., लखनऊ संभाग

पत्रिका समन्वयक
श्रीमती प्रीति सक्सेना
सहायक आयुक्त, के.वि.सं., लखनऊ संभाग

मुख्य संपादक
श्री घनश्याम पाण्डेय
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, बी.के.टी., लखनऊ

संपादक मंडल

1. डॉ. सतीश चन्द्र, हिंदी अनुवादक, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ
2. डॉ. गीतेश सिंह, उपप्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय सी.आर.पी.एफ. बिजनौर (द्वितीय पाली), लखनऊ
3. श्रीमती मीता गुप्ता, स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी), केन्द्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली
4. श्री राकेश कुमार गुप्ता, पुस्तकालयाध्यक्ष, केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, बी.के.टी., लखनऊ
5. श्रीमती सना अनवार, पुस्तकालयाध्यक्ष, केन्द्रीय विद्यालय सी.आर.पी.एफ. बिजनौर (प्रथम पाली), लखनऊ
6. श्रीमती प्रीति बाला, प्र. स्ना. शिक्षक (कार्यानुभव), केन्द्रीय विद्यालय गोमतीनगर (द्वितीय पाली) लखनऊ
7. सुश्री रीना पाण्डेय, प्राथमिक शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, बी.के.टी. लखनऊ

आवरण पृष्ठ—श्रीमती अंजलि पाण्डेय, प्र. स्ना. शिक्षक (कला शिक्षा), केन्द्रीय विद्यालय रायबरेली (प्रथम पाली)

अस्वीकरण- 'भारती' ई-पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कविताओं में व्यक्त विचार लेखक के स्वयं के हैं, उससे प्रकाशक एवं संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है, एवं न ही ये रचनाएं केन्द्रीय विद्यालय संगठन का प्रतिनिधित्व करती हैं। किसी भी कॉपीराइट के उल्लंघन की ज़िम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।

तत् त्व पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# केन्द्रीय विद्यालय संगठन

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान
**KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN**
Under Ministry of Education, Govt. of India
मुख्यालय, नई दिल्ली / Head Quarters, New Delhi
Website : www.kvsangathan.nic.in
E-mail : jc.pers@kvs.gov.in / दूरभाष / Tel. : 91-11-26858565
18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली / 18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016


08/07/2022

**एस. एस. रावत**
**संयुक्त आयुक्त (कार्मिक)**
S. S. Rawat
**Joint Commissioner** (Pers.)


## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष, गर्व एवं संतुष्टि का अनुभव हो रहा है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग द्वारा राजभाषा हिंदी की गृह-पत्रिका **'भारती'** के अष्टम अंक *हिंदी विशेषांक* का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी की परम्परा एकता, भाईचारा, सौहार्द व अपनत्व की है जो हमें वास्तविक खुशी देती है। राजभाषा के माध्यम से प्रकाशित होने वाली यह पत्रिका सरल, सुगम, बोधगम्य शैली में हिंदी के प्रचार- प्रसार में उत्कृष्ट योगदान देगी। पत्रिका के माध्यम से कार्मिकों को अपने विचारों तथा भावों को परिलक्षित करने का अवसर मिलेगा। निःसंदेह यह पत्रिका भारत सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने के लिए संगठन द्वारा अपनाई गई विभिन्न गतिविधियों का दर्पण है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान में अपनी सार्थक भूमिका प्रदान करेगी।

एस॰एस॰रावत

**(एस0 एस0 रावत)**
**संयुक्त आयुक्त (कार्मिक)**

देवेन्द्र कुमार द्विवेदी
उपायुक्त
**Devendra Kumar Dwivedi**
Deputy Commissioner

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

**केन्द्रीय विद्यालय संगठन**
**KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN**
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
(Under Ministry of Education, Govt. of India)
क्षेत्रीय कार्यालय, सेक्टर-जे, अलीगंज लखनऊ - 226024
Regional Office, Sector–J, Aliganj Lucknow - 226024
☎ दूरभाष : 0522-2745386, फैक्स: 2745536
Website : https://rolucknow.kvs.gov.in/
E-mail add.: dcrolucknow@gmail.com

दिनांक: 9 सितम्बर, 2022

## संदेश

हिंदी दिवस के पुनीत अवसर पर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में निरत केंद्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग के सभी हिंदी प्रेमी शिक्षकों और विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई।

भाषा एवं संस्कृति किसी भी समाज का न केवल अभिन्न अंग होती हैं, बल्कि उस समाज के सर्वांगीण अस्तित्व को भी परिभाषित करती हैं। मानव-सभ्यता के उदय के साथ भाषा ने जन्म लिया क्योंकि भाषा ही मनुष्य की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, उसके विचारों की संवाहक है। विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति से मनुष्यों के बीच परस्पर संवाद बढ़ा और मानव-समाज का निर्माण हुआ। कालांतर में भाषा और संस्कृति का साथ-साथ विकास हुआ और वे एक-दूसरे के पूरक बने। हमारे देश की पहचान इसकी सांस्कृतिक विरासत से ही है, जो अनेक धर्मों, जातियों, भाषाओं और बोलियों को अपने अंतस में समाविष्ट किए हुए है। हमारे ऋषि-मुनियों एवं महापुरुषों ने क्षेत्रीय संकीर्णता से ऊपर उठकर समस्त मानव-समाज के कल्याण की संकल्पना की। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना ने भारतीय दर्शन को अनुप्राणित किया और भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत और सुरक्षित रह पाई।

भारत एक बहुभाषी देश है एवं हिंदी, देश के अधिकतर स्थानों में बोली और समझी जाती है। आज़ादी से पूर्व भी हिंदी आम जनता की भाषा रही है। इसके द्वारा देश के साधारण से साधारण व्यक्ति तक पहुंचा जा सका। वर्तमान में आधुनिक तकनीक और डिजिटल माध्यमों की सुगमता के कारण हिंदी अधिकाधिक लोगों तक प्रभावी तरीके से पहुंच रही है।

शिक्षण, प्रशिक्षण, व्यापार, रोज़गार समेत अनेक क्षेत्रों में हिंदी का व्यापक इस्तेमाल हो रहा है। हमारे देश की विभिन्न भाषाएं मोतियों की भांति हैं और हिंदी उन मोतियों के हार के रूप में भारत मां का सौंदर्य बढ़ा रही है। हिंदी देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। विश्व स्तर पर हिंदी निरंतर अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करती जा रही है। भारत से होते हुए हिंदी आज विश्व में एक सशक्त संपर्क भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की ओर अग्रसर है। भौगोलिक दृष्टि से भी हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि हिंदी बोलने व लिखने-समझने वाले लोग पूरे विश्व में व्याप्त हैं। इन सब का प्रमुख कारण यही है कि हिंदी एक सरल तथा सहज भाषा है, जिसे आसानी से सीखा जा सकता है।

संघ की राजभाषा होने के कारण यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम हिंदी के विकास के लिए कार्य और सामूहिक प्रयास करें। हिंदी के संवर्धन के लिए केंद्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग के शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। वे सरकारी कामकाज में हिंदी की सरलता और सहजता सुनिश्चित कर हिंदी की उपयोगिता को बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं। भविष्य में भी वे हिंदी की अलख को जगाए रखेंगे, इसी विश्वास के साथ राजभाषा पत्रिका 'भारती' के आठवें अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

**(देवेन्द्र कुमार द्विवेदी)**
**उपायुक्त**

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Kendriya Vidyalaya Sangathan
क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ
Regional Office, Lucknow
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन
Under Ministry of Education,
Govt. of India
**Website**: https://rolucknow.kvs.gov.in/

पत्रांक फा०26350(M28)/2021-22/के०वि०सं० (क्षे० का०) लखनऊ/ दिनांक: 09.09.2022

## संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग आजादी के इस अमृतकाल में राजभाषा हिंदी पत्रिका "भारती" के अष्टम अंक का प्रकाशन हिंदी पखवाड़े के दौरान करने जा रहा है। राजभाषा पत्रिका का यह अंक "हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार एवं उत्थान" विषय पर केंद्रित है। लखनऊ संभाग के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों ने साहित्य के विविध रूपों में अपनी सृजनात्मकता को लेखनीबद्ध किया है।

हिंदी का सर्व समावेशी स्वरूप इसकी समृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण कारण है। हिंदी जन-जन की भाषा है। यह आसानी से सीखी, समझी, बोली एवं लिखी जा सकती है और सर्वग्राह्य है।

दैनिक कार्यालयी कार्यों में राजभाषा हिंदी के सरल एवं सुगम प्रयोग हेतु प्रस्तुत पत्रिका विभिन्न लेखों, रचनाओं आदि के माध्यम से सहज रूप से मार्ग प्रशस्त करेगी। "भारती" का यह अष्टम अंक हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के हमारे संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन मे सहायक बने, इसी कामना के साथ सभी रचनाकारों एवं सुधी पाठकजनों को साधुवाद।

(प्रीति सक्सेना)
सहायक आयुक्त

## मुख्य संपादक की कलम से.....

हिंदी भाषा भारतवर्ष की सर्वाधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है। इसका समृद्ध साहित्य, व्याकरण, शब्दकोश, लिपि एवं बोल-चाल की भाषा के अनेक स्वरूप इसकी उपादेयता में चार चाँद लगाते हैं। सामाजिक सरोकारों की सहज भावाभिव्यक्ति की भाषा के रूप में हिंदी का योगदान महत्त्वपूर्ण हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग की राजभाषा पत्रिका "भारती" का अष्टम अंक "हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार एवं उत्थान" विषय केंद्रित है। भारती पत्रिका के इस अंक में शामिल लेख, कविता, संस्मरण इत्यादि के माध्यम से रचनाकारों ने हिंदी भाषा व साहित्य को समृद्ध किया है एवं हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित किया है।

विषय से इतर भी कुछ रचनाएं अपनी उत्कृष्टता एवं भावप्रवणता के कारण प्रस्तुत पत्रिका में सम्मिलित की गयी हैं।

आवरण पृष्ठ हेतु शिक्षकों से उल्लेखनीय संख्या में प्रविष्टियां प्राप्त हुई, जिसमें से पत्रिका की विषयवस्तु से साम्यता एवं उसका प्रतिनिधित्व करने वाली कृति का चयन प्रस्तुत पत्रिका हेतु किया गया है। सभी शिक्षक जिन्होंने पत्रिका के आवरण पृष्ठ हेतु प्रविष्टियां प्रेषित की हैं, उन्हें कृतज्ञ हृदय से धन्यवाद।

जिन रचनाकारों की रचनाएं पत्रिका के प्रस्तुत अंक में स्थान न पा सकी, उन्हें भी उनके प्रयास हेतु साधुवाद।

पत्रिका का संपादन अत्यंत सावधानीपूर्वक किया गया है परंतु मानवीय त्रुटि से इंकार नहीं किया जा सकता। सुधी पाठकजन भूल/त्रुटि को क्षमा करेंगे एवं अपने रचनात्मक सुझाव ई-मेल के माध्यम से ई-मेल आईडी bhartirajbhasha@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं।

आदरणीय उपायुक्त महोदय, सहायक आयुक्त महोदया को उनके निरंतर मार्गदर्शन हेतु धन्यवाद।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को उनके योगदान एवं पत्रिका के नवीन कलेवर में प्रस्तुतीकरण हेतु साधुवाद।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

(घनश्याम पाण्डेय)
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्टेशन
बक्शी का तालाब, लखनऊ

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | शीर्षक | रचिता/लेखक | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 1. | संविधान में हिंदी: एक समीक्षा | डॉ. सतीश चन्द्र | 1-7 |
| 2. | भारतीय संस्कृति का स्पंदन है हिंदी | डॉ. अपर्णा सक्सेना | 8-10 |
| 3. | हिंदी मेरी अभिव्यक्ति | श्रीमती संगीता यादव | 11 |
| 4. | केन्द्रीय विद्यालयों में राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग | श्री चंद्रभूषण प्रकाश वर्मा | 12-14 |
| 5. | नारी शक्ति को नमन | श्री शिव किशोर पाण्डेय | 15 |
| 6. | प्रकृति और विज्ञान | डॉ. नीरज बाबू | 16 |
| 7. | कर्म | श्री अरविन्द कुमार राय | 17 |
| 8. | देश की भाषा, हिंदी भाषा | श्रीमती मधु बाला | 18 |
| 9. | पुस्तक समीक्षा: गीतांजलि श्री द्वारा रचित 'रेत समाधि'- लेखन की हर सरहद को तोड़ता उपन्यास | श्रीमती मीता गुप्ता | 19-21 |
| 10. | हिंदी भाषा के उत्थान में सोशल मीडिया की भूमिका | श्रीमती नफीस फातमा | 22-23 |
| 11. | हिंदी भाषा में रोज़गार की संभावनाएं | श्री वीरेन्द्र कुमार | 24-26 |
| 12. | पूर्वोत्तर भारत में हिंदी | श्री सिद्धार्थ कुमार पाण्डेय | 27 |
| 13. | विश्व के शिखर पर हिंदी | श्री धीरेन्द्र बहादुर सिंह | 28-29 |
| 14. | तकनीकी युग में हिंदी भाषा का विकास | श्रीमती संगीता सक्सेना | 30 |
| 15. | भाषा और हम<br>(तेलुगू क्षेत्र की अनुभूतियाँ) (संस्मरण) | श्री इंद्रमणि उपाध्याय | 31-32 |
| 16. | रे मन अपनी भाषा बोल (गीत) | डॉ. मिथिलेश राकेश | 33 |
| 17. | हिंदी | श्रीमती अनीता सिंह | 34 |
| 18. | हिंदी का महत्त्व | श्रीमती रूबी मिश्रा | 35 |
| 19. | हिंदी भाषा- हमारा अभिमान | श्री काशिफ अहसन | 36 |
| 20. | जल: प्रकृति की अनमोल धरोहर | श्रीमती श्वेता किरण | 37 |
| 21. | जीवन इतना सरल न होता | श्री आदर्श शर्मा | 38 |
| 22. | चरित्र निर्माण | श्रीमती आकांक्षा | 39 |
| 23. | भावों की अनंत यात्रा | श्री नितिन कुमार मिश्र | 40 |
| 24. | प्रकृति का भय | श्री संजीव भदौरिया | 41 |
| 25. | मां: एक योद्धा | श्री राकेश मिश्र | 42 |
| 26. | रक्त दान | श्रीमती रूचि गुप्ता | 43 |
| 27. | हिंदी साहित्य का नायाब हीरा- मुंशी प्रेमचंद | श्रीमती प्रीति बाला | 44 |
| 28. | हिंदी भाषा के संवर्धन में विद्यालयी पुस्तकालयों का योगदान | श्री राकेश कुमार गुप्ता | 45-46 |
| 29. | हिंदी को वास्तविक सम्मान दिलाते केन्द्रीय विद्यालय | श्रीमती पूर्णिमा त्रिपाठी | 47 |

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | शीर्षक | रचिता/लेखक | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 30. | आचार्य विचनेश | श्रीमती आभा मिश्रा | 48 |
| 31. | आओ बढ़ चलें..... हिंदी की ओर | श्रीमती संगीता अग्रवाल | 49 |
| 32. | हिंदी- राष्ट्र का गौरव | श्री विनोद कुमार मिश्र | 50 |
| 33. | कुण्डलियां | श्रीमती पूनम शुक्ला | 51 |
| 34. | हिंदी का करें सम्मान | श्रीमती प्रियंका गुप्ता | 52 |
| 35. | हिंदी | श्री सिद्धार्थमणि त्रिपाठी | 53 |
| 36. | हिंदी की समरसता | श्री दशरथ यादव | 54 |
| 37. | कविता हूँ मैं | श्री अमित कुमार पाण्डेय | 55 |
| 38. | निज भाषा से ज्ञान बढ़े है, निज भाषा से मान | श्रीमती साधना | 56 |
| 39. | हिंदी- भारत की बिंदी | श्री रमण प्रकाश सिंह | 57 |
| 40. | राजभाषा | श्री मनीष कुमार मिश्र | 58 |
| 41. | हिंदी | डॉ. आलोक कुमार अवस्थी | 59 |
| 42. | धरती का स्वर्ग- पुस्तकालय | श्रीमती प्रतिमा शर्मा | 60 |
| 43. | पर्यावरण हमारा है | श्री चन्द्र प्रकाश तिवारी | 61 |
| 44. | विद्यार्थियों से एक गुज़ारिश | श्री प्रमोद कुमार | 62 |
| 45. | तुम्हें प्रणाम | श्री जैन प्रकाश | 63 |
| 46. | रण | श्री जय किशन कुशवाहा | 64 |
| 47. | हिंदी का विकास- एक संस्मरण | श्री अरुणेश वैश्य | 65 |
| 48. | हिंदी | श्रीमती साधना कुमारी सचान | 66 |
| 49. | पुस्तक मेरी प्यारी मित्र | श्रीमती मनोरमा मिश्रा | 67 |
| 50. | मातृभाषा हिंदी | श्रीमती मनोरमा मिश्रा | 67 |
| 51. | जश्ने- आज़ादी | श्रीमती मानवी अग्रवाल | 68 |
| 52. | मां का बेटी के नाम ख़त | श्रीमती सुष्मिता सिंह | 69 |
| 53. | अशेष हो, विशेष हो | श्री मनीष मिश्र | 70 |
| 54. | शिखर की ओर | श्री आदित्य कुमार मिश्र | 71 |
| 55. | अंगारों की धधकती आग | श्री विक्रांत यादव | 72 |
| 56. | मां ले तू मेरी बात..... | श्रीमती मनु | 73 |
| 57. | हिंदी का उत्थान | श्रीमती गरिमा श्रीवास्तव | 74 |
| 58. | मेरी भाषा हिंदी | सुश्री नेहा | 75 |
| 59. | राजभाषा उपलब्धियां | | 76-79 |

# संविधान में हिंदी: एक समीक्षा

संघ की राजभाषा के रूप में गहन विचार-विमर्श के पश्चात 14 सितंबर 1949 को, भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को स्वीकार किया। राजभाषा एक ऐसा पारिभाषिक शब्द है जो भारत के संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343(1) में अंग्रेजी पद बंध Official language के पर्याय के रूप में है। राजभाषा शब्द 'कार्यालय-हिंदी' के रूप में लिया गया है। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति, अस्मिता, गरिमा एवं आदर्शों से होती है। कोई भी राष्ट्र, भाषा के माध्यम से प्रगति करता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया।

संविधान में राजभाषा के संबंध में अनुच्छेद 120, 210 एवं 343 से 351 तक व्यवस्था की गई है। संघ के किन प्रयोजनों के लिए हिंदी का प्रयोग होगा और किन प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग किया जाना है, यह संवैधानिक उपबंध, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय-समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निदेशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

भाग- 5 अध्याय 2 : संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 120(1) के अनुसार- भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा।

परंतु यथास्थिति, राज्य-सभा के सभापति या लोकसभा के अध्यक्ष अथवा ऐसे रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

(2) जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारम्भ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

उपर्युक्त अनुच्छेद में हिंदी एवं अंग्रेजी की दो स्थितियां हैं- 1. संसद के कार्य की भाषा 2. संसद को संबोधित करने वाली भाषा। जहाँ तक संसद में लिखित कार्य का प्रश्न है वह हिंदी या अंग्रेजी में होगा।

भाग- 6 अध्याय 3 : विधान मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 210(1) के अनुसार- भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा:

परंतु यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा ऐसे रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति

(2) जब तक राज्य के विधान मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करें तब तक इस संविधान के प्रारम्भ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।#

---

किसी सदस्य को, जो हिंदी या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

# परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान मंडलों के संबंध में यह खण्ड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो कि इसमें आने वाले "पन्द्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "पच्चीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों।

#परंतु यह और कि अरुणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान मंडलों के संबंध में यह खण्ड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो कि इसमें आने वाले "पन्द्रह वर्ष" के शब्दों के स्थान पर "चालीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों।

भाग 17 अध्याय 1 : संघ की राजभाषा

अनुच्छेद 343(1) के अनुसार- संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। (यथा 1, 2, 3, 4 आदि)

(2) खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारम्भ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था:

परंतु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा:

(क) अंग्रेजी भाषा का, या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का, ऐसे प्रयोजनों के लिए उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएँ।

344. राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

344 (1) राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारम्भ से पाँच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात ऐसे प्रारम्भ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे।

344(4) एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोकसभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे। यह समिति राष्ट्रपति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

अध्याय -2 : प्रादेशिक भाषाएं

अनुच्छेद 345. राज्य की राजभाषा या राजभाषाएँ

अनुच्छेद 346. एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध

अध्याय- 3 : उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों में तथा अधिनियमों, विधेयकों आदि में प्रयोग की जाने वाली भाषा-

अनुच्छेद 348 (1) के अनुसार- इस भाग के पूर्ववर्ती उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी जब तक संसद, विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी भाषा में होंगी।

अनुच्छेद 349 के अनुसार- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया इस संविधान के प्रारंभ से पन्द्रह वर्ष की अवधि के दौरान अनुच्छेद 348(1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक संसद में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना प्रस्तावित नहीं किया जाएगा।

संविधान के उपर्युक्त अनुच्छेदों में राजभाषा हिंदी की बड़ी जटिल स्थिति है। विश्लेषण करने पर निम्न बातें स्पष्ट होती हैं।

(क) उच्चतम न्यायालय में प्रयोग की जाने वाली भाषा, जब तक संसद विधि द्वारा किसी अन्य भाषा को न मान ले, अंग्रेजी ही रहेगी।

(ख) उच्च न्यायालयों की भी भाषा अंग्रेजी होगी। हाँ, राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति लेकर राज्य की राजभाषा को प्राधिकृत कर सकता है।

अध्याय- 4 विशेष निदेश : व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 350 के अनुसार-

(क ) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ- प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषायी अल्पसंख्यक वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृ भाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।

(ख) भाषायी अल्पसंख्यक वर्गों के लिए विशेष अधिकारी- भाषायी अल्पसंख्यक वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाएगा।

हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार- "संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची# में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।"

#आठवीं अनुसूची में वर्तमान में 22 भाषाएं इस प्रकार हैं- 1. असमिया 2. बंगला 3. बोडो 4. डोगरी 5. गुजराती 6. हिंदी 7. कन्नड़ 8. कश्मीरी 9. कोंकणी 10. मैथिली 11. मलयालयम 12. मणिपुरी 13. मराठी 14. नेपाली 15. ओडिआ 16. पंजाबी 17. संस्कृत 18. संथाली 19. सिंधी 20. तमिल 21. तेलगू 22. उर्दू।

भारत की सामासिक संस्कृति एक मिली-जुली संस्कृति है। मिली-जुली संस्कृति की संपर्क भाषा भी मिली-जुली होगी। यह मिली-जुली भाषा साहित्य की शुद्ध भाषा से अलग होगी। मिली-जुली भाषा का उद्देश्य केवल विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच संपर्क भर करवाना है। अतः इसमें भाषा की अशुद्धियाँ आना स्वाभाविक है। भाषा अशुद्धियों को लेकर कोई भाषा साहित्य की परिष्कृत भाषा नहीं बन सकती है।

संवैधानिक उपबंधों की विवेचना करने पर यह स्पष्ट होता है कि संविधान के अनुच्छेद 343 में वर्णित हिंदी, संघ की राजभाषा हिंदी है तथा संविधान के अनुच्छेद 351 में वर्णित हिंदी संघ की राजभाषा नहीं है। जहाँ तक राजभाषा से संबंधित सभी अधिनियमों, संकल्पों, कार्यालय ज्ञापनों के लिए कहीं भी अनुच्छेद 351 का संदर्भ नहीं दिया गया है। प्रत्येक स्थान पर अनुच्छेद 343 का ही उल्लेख किया गया है। अतः संविधान के अनुच्छेद 351 में उल्लिखित हिंदी ही भारत की सामासिक संस्कृति की संपर्क भाषा है। संसदीय समिति की 27 अप्रैल, 1960 की अधिसूचना के अनुसार संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी के सामासिक रूप को स्थापित करने के लिए शिक्षा मंत्रालय को कहा गया है और राजभाषा हिंदी को बढ़ाने के लिए गृह मंत्रालय को कहा गया। यहाँ यह बात फिर स्पष्ट हो जाती है कि अनुच्छेद 343 और अनुच्छेद 351 की हिंदी अलग-अलग है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संविधान में हिंदी को 15 वर्ष की अवधि के बाद अथवा इससे पहले पूर्ण रूप से प्रयोग में लाने की बात कही गई थी। इस आशय का अधिनियम 1963 में रखा गया, जिसमें हिंदी को संघीय स्तर पर 1965 से राजभाषा के रूप में स्थापित करने की बात कही गई। यही विधेयक कुछ संशोधनों के साथ 1967 में पास कर दिया गया। राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति को जानने के लिए इस अधिनियम का बहुत महत्व है।

राजभाषा आयोग सिफारिशों और संसदीय समिति द्वारा उनके अनुमोदन करने के परिणामस्वरूप राजभाषा अधिनियम 1963 का जन्म हुआ। आगे चलकर यही अधिनियम संशोधित राजभाषा अधिनियम 1967 कहलाया। यह अधिनियम इस प्रकार है-

राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 (1963 का अधिनियम सं0 19) (10 मई,1963)

उन भाषाओं का जो संघ के राजकीय प्रयोजनों, संसद में कार्य के व्यवहार, केन्द्रीय और राज्य अधिनियमों और उच्च न्यायालयों में कतिपय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेंगी, उपबंध करने के लिए अधिनियम भारत गणराज्य के चौदहवें वर्ष में संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ:- यह अधिनियम राजभाषा अधिनियम 1963 कहा जाएगा।

2. परिभाषाएँ: इन अधिनियमों में, उन पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषाएँ दी गई हैं, जब तक कि प्रसंग से अन्यथा अपेक्षित न हो, जैसे- 'हिंदी' से वह हिंदी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी हो, 'नियत दिन' से धारा 3 के संबंध में जनवरी 1965 का 26वाँ दिन अभिप्रेत है।

3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना-

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 में पाँच उप धाराएं हैं। इसमें धारा 3 की उपधारा 3 के अंतर्गत आने वाले निम्नलिखित दस्तावेज आते हैं जो अनिवार्य रूप से हिंदी एवं अंग्रेजी में जारी किए जाते हैं:

1. संकल्प (Resolutions), 2. सामान्य आदेश (General Order), 3. नियम (Rule), 4. अधिसूचनाएं (Notifications), 5. प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative and other reports), 6. प्रेस विज्ञप्तियां (Press Communiques), 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative and other reports to be laid before a House or Houses of Parliament), 8. संसद के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले सरकारी कागज पत्र (Govt. papers to be laid before the Parliament) 9. संविदाएं (Contracts), 10. करार (Agreement), 11. अनुज्ञप्तियां (License) 12. अनुज्ञापत्र (Permit), 13. टेंडर नोटिस (Tender Notice), 14. टेंडर फार्म (Tender Form)।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित हैं-

क- ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों,

ख- ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह या समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों,

ग- ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

4. राजभाषा के संबंध में समिति- जिस तिथि से धारा 3 लागू होगी उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से एक समिति का गठन होगा, जो हिंदी की प्रगति का पुनर्विलोकन करेगी और अपनी सिफारिशों का प्रतिवेदन राष्ट्रपति को देगी।

5. केन्द्रीय अधिनियम आदि का प्राधिकृत हिंदी अनुवाद- नियत दिन को और उसके बाद शासकीय राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित हिंदी में अनुवाद उसका हिंदी में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

6. कतिपय दशाओं में राज्य अधिनियमों का प्राधिकृत हिंदी अनुवाद- जहाँ किसी राज्य के विधान मंडल ने उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से नियत दिन या उसके बाद राज्य के शासकीय राजपत्र में प्रकाशित किया जा सकेगा और ऐसी दशा में ऐसे किसी अधिनियम या अध्यादेश का हिंदी में अनुवाद हिंदी भाषा में उसका प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

7. उच्च न्यायालयों के निर्णयों, आदि में हिंदी या अन्य राजभाषा का वैकल्पिक प्रयोग- नियत दिन या उसके बाद किसी भी दिन से राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से , अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी या उस राज्य की राजभाषा के प्रयोग, उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा पारित किसी निर्णय, आदेश के प्रयोजनों के लिए प्राधिकृत कर सकेगा।

8. नियम बनाने की शक्ति- केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी।

9. कतिपय उपबंधों का जम्मू-कश्मीर पर लागू न होना- धारा 6 और धारा 7 के उपबंध जम्मू-कश्मीर राज्य पर लागू नहीं होंगे।

उपर्युक्त संवैधानिक स्थिति को अच्छी तरह से लागू करने के लिए समय-समय पर विभिन्न विषयों पर 1974 तक लगभग 200 कागजात, संकल्प, अधिसूचना, कार्यालय ज्ञापन आदि के रूप में जारी किए गए। इतने ढेर सारे अनुदेश जारी करने के पश्चात भी संघ सरकार को 1976 में राजभाषा नियम बनाने पड़े। राजभाषा अधिनियम की धारा 8 में नियम बनाने की व्यवस्था थी फिर भी करीब 10 वर्षों तक राजभाषा नियम नहीं बन पाए। सन 1976 में यह नियम बने, जो राजभाषा नियम 1976 के नाम से जाने जाते हैं। यह राजभाषा नियम-1976 इस प्रकार हैं-

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग)
नियम 1976 (यथा संशोधित 1987, 2007 तथा 2011)

(भारत के 17 जुलाई 1976 के राजपत्र के भाग-2 खण्ड-3 उपखण्ड-1 में प्रकाशित)

केन्द्रीय सरकार, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 की उपधारा 4 के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है। इनमें कुल 12 नियम हैं:

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ-
   1. इन नियमों का संक्षिप्त नाम (संघ के शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग) नियम 1976 है।
   2. इन नियमों का विस्तार तमिलनाडु राज्य के सिवाय, संपूर्ण भारत पर होगा।
   3. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रवृत होंगे।

2. परिभाषाएं- इन नियमों में, उन पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषाएं दी गई हैं, जब तक कि प्रसंग से अन्यथा अपेक्षित न हो, जैसे- अधिनियम, हिंदी में प्रवीणता, हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान, अधिसूचित आदि।

3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि- केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से 'क क्षेत्र' के राज्य को किसी कार्यालय को या व्यक्ति को हिंदी में भेजे जाएँगे। 'ख क्षेत्र' के राज्य को किसी कार्यालय को या व्यक्ति को हिंदी अथवा अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं। 'ग क्षेत्र' के राज्य को किसी कार्यालय को या व्यक्ति को हिंदी अथवा अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि- केन्द्रीय सरकार के मंत्रालय या विभाग, केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी में या अंग्रेजी में हो सकते हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

5. हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर- नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

6. हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग- अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि- कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि आवेदन, अपील या अभ्यावेदन पर हस्ताक्षर हिंदी में किए जाएं तो उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणी का लिखा जाना-
   1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पणी या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

4. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी केन्द्रीय सरकार आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है, जहाँ ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएँ, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

9. हिंदी में प्रवीणता- यदि किसी कर्मचारी ने-
क- मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या
ख- स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया है, या
ग- यदि वह इन नियमों के उपाबध्द प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

10. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान- यदि किसी कर्मचारी ने –
(1) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है, या
(2) केन्द्रीय सरकार की हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या
(3) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या
(ख) यदि वह इन नियमों के उपाबध्द प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
10 (4) केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएँगे।

11. मैन्युअल, संहिताएँ, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य,लेखन सामग्री आदि-
(1) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैन्युअल, संहिताएँ, और अन्य प्रक्रिया संबंधी साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी दोनों में द्विभाषिक रूप में, यथास्थिति, मुद्रित किया जाएगा, साइक्लोस्टाइल किया जाएगा, प्रकाशित किया जाएगा।
(2) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग में लाए जाने वाले प्रारूपों और रजिस्टरों के शीर्ष हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।
(3) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए लिखे गए, मुद्रित या उत्कीर्ण सभी नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा स्टेशनरी की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में होंगी।

12. अनुपालन का उत्तरदायित्व-
केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-
(1) यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों का समुचित रूप से अनुपालन किया जाता है, और
(2) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जाँच पड़ताल के उपाय करें।
(3) केन्द्रीय सरकार अधिनियमों और नियमों के उपबंधों के अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर ऐसे निदेश जारी कर सकती है जैसे आवश्यक हों।

राजभाषा नीति के अनुपालन की दृष्टि से देश के विभिन्न राज्यों का वर्गीकरण
राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम 1976 के अनुसार सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं कार्यान्वयन की दृष्टि से देश के विभिन्न राज्यों को 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में वर्गीकृत किया गया है।

इन क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले राज्यों का विवरण निम्नानुसार है-

'क' क्षेत्र- बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा राज्य राजधानी क्षेत्र दिल्ली।

'ख' क्षेत्र- गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र चण्डीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा व नगर हवेली।

'ग' क्षेत्र- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

ऊपर बताए गए राजभाषा नियमों के बन जाने के उपरांत गृह मंत्रालय ने इन नियमों के कार्यान्वयन को ध्यान में रखकर 1976-77 में एक वार्षिक कार्यक्रम बनाया। लक्ष्य प्राप्त न होने के कारण यही वार्षिक कार्यक्रम 1981-82 तक जारी होता रहा। अब वार्षिक कार्यक्रम प्रतिवर्ष जारी होता है।

राजभाषा की संवैधानिक स्थिति से स्पष्ट होता है कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग की गति बहुत धीमी है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को संवैधानिक आधार प्राप्त है। इसके बावजूद सरकारी कार्यालयों में हिंदी का अपेक्षित प्रयोग नहीं हो पा रहा है। हालाँकि राजभाषा के प्रयोग की स्थिति में सुधार हुआ है, फिर भी अभी काफी सुधार की आवश्यकता है।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

डॉ. सतीश चन्द्र
हिंदी अनुवादक
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग

# भारतीय संस्कृति का स्पंदन है हिंदी

भाषा संस्कृति की पोषक भी होती है और संवाहक भी। भाषा भावों और विचारों की वाहक होती है जिसके माध्यम से मनुष्य परस्पर व्यवहार करने में सक्षम होते हैं। मानव द्वारा संचालित सृष्टि के सभी कार्यों में भाषा की भूमिका सर्वोत्तम मानी गई है और यह एक सच्चाई है कि जिस भी भाषा को मनुष्य अपने परिवेश से सहज रूप में अपना लेता है, वह कोई जन्मजात प्रवृत्ति नहीं होती और न ही उसके या उसके तत्कालीन जनसमुदाय द्वारा रची गई भाषा होती है, वह भाषा तो युग-युगांतर से जन समूह के सांस्कृतिक व सभ्याचारिक संदर्भों से निर्मित होती है और उस समाज के विकास के साथ-साथ ही विकसित होती जाती है। यही कारण है कि जो समाज जितना अधिक विकसित होता है उस समाज की भाषा उतनी ही उन्नत होती है अथवा यह भी कहा जा सकता है कि किसी समाज के विकास की पहचान उसकी भाषा से की जा सकती है।

वस्तुतः संस्कृति भाषा के विकास का मूलाधार होती है और फिर यही भाषा संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन करती है। इसलिए भाषा और संस्कृति का परस्पर गहरा संबंध माना जाता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति बहुत प्राचीन एवं सनातन है और भारतीय संस्कृति के एकाधिक तत्वों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति हिंदी में प्राचीन काल से ही लक्षित होने लगती है। इसी गुण के कारण हिंदी भारतीय संस्कृति के व्यापक तत्वों को समाहित करने वाली भाषा बन गई है। भाषा का भौतिक आधार ध्वनि होती है। हिंदी भाषा की ध्वनियों का प्राचीनतम रूप वैदिक ध्वनि समूह है, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। हिंदी भाषा का विकास संस्कृत से हुआ है और इसकी पुरातन विकास-धारा वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और शौरसेनी, अपभ्रंश और शौरसेनी से हिंदी भाषा मानी जाती है।

भारतीय संस्कृति के संवर्धन और उन्नयन में हिंदी का योगदान हमेशा से रहा है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी विश्व के प्रायः सभी देशों के महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन में भागीदार है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। आज जब 21वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियां एवं भाषाएं आदान-प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं, ऐसे में हिंदी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर रही है। उसके पास पहले से ही बहु सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा-सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है। हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की ही राज भाषा नहीं है बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, फ़िजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद तथा सुरीनाम जैसे देशों की सम्पर्क भाषा भी है। वह भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के बीच खाड़ी देशों, मध्य एशियाई देशों, रूस, समूचे यूरोप, कनाडा, अमेरिका तथा मैक्सिको जैसे प्रभावशाली देशों में रागात्मक जुड़ाव तथा विचार-विनिमय का सबल माध्यम है।

हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है, जो ध्वनि प्रधान है। इसे विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक, सरल एवं सुबोध भाषा माना गया है क्योंकि इसमें सूक्ष्म-सी ध्वनि भेद होने पर नए ध्वनि-चिह्न का प्रावधान किया जाता है। भारत की संस्कृति में कुछ ऐसा है जो हमेशा से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। संस्कृति दूसरों से व्यवहार करने का, सौम्यता से चीज़ों पर प्रतिक्रिया करने का, मूल्यों के प्रति हमारी समझ का, न्याय, सिद्धांत और मान्यताओं को मानने का एक तरीका है। भारत की संस्कृति में सब कुछ है, जैसे विरासत के विचार, लोगों की जीवन-शैली, मान्यताएँ, रीति-रिवाज़, मूल्य, आदतें, परवरिश, विनम्रता, ज्ञान आदि। पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को आगे नई पीढ़ी को सौंपते हैं। भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही है किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। यही कारण है कि विश्व भर के लोग हमारी भारतीय संस्कृति को करीब से समझना और जानना चाहते हैं।

हिंदी विश्वव्यापी भाषा होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति की संवाहिका भी है। हम अपनी संस्कृति की व्याख्या अपनी भाषा में जितनी सरलता से कर सकते है उतनी सरलता से दूसरी भाषा में नहीं कर सकते। भाषा हृदय की अभिव्यक्ति के साथ ही संस्कृति और सभ्यता की वाहक भी है। इसी कारण हिंदी चुनौतियों से जूझते हुए आज राजभाषा ही नहीं, बल्कि विश्वभाषा बनने के निकट है। इसमें अन्य भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता है जो कि हिंदी की सबसे बड़ी पहचान है। वैश्विक स्तर पर भी भारतीयता की पहचान के रूप में हिंदी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है। भारतीय संस्कृति आज भी अपने मूल अस्तित्व में हिंदी के द्वारा ही विश्व भर में लोकप्रिय है। अनेक देशों से निकलने वाली हिंदी पत्रिकाओं ने भी हिंदी को वैश्विक फ़लक पर ले जाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

आज हिंदी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही है, उसमें रोजी-रोटी की तलाश में अपना वतन छोड़ कर गए गिरमिटिया मजूदरों के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। गिरमिटिया मजदूर अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति भी लेकर गए, जो आज हिंदी को वैश्विक स्तर पर फैला रहे हैं। एशिया के अधिकतर देशों चीन, श्रीलंका, कंबोडिया, लाओस, थाइलैंड, मलेशिया, जावा आदि में रामलीला के माध्यम से राम के चरित्र पर आधारित कथाओं का मंचन किया जाता है। वहां के स्कूली पाठ्यक्रम में रामलीला को शामिल किया गया है। हिंदी की रामकथाएं भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संवाहक बन चुकी हैं। रेडियो सीलोन और श्रीलंकाई सिनेमाघरों में चल रही हिंदी फिल्मों के माध्यम से हिंदी की उपस्थिति समझी जा सकती है। आज हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में जितने रचनाकार सृजन कर रहे हैं उतने बहुत सारी भाषाओं के बोलने वाले भी नहीं हैं। केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में ही दो सौ से अधिक हिंदी साहित्यकार सक्रिय हैं जिनकी पुस्तकें छप चुकी हैं। यदि अमेरिका से

"विश्वा", हिंदी जगत तथा श्रेष्ठतम वैज्ञानिक पत्रिका "विज्ञान प्रकाश' हिंदी की दीपशिखा को जलाए हुए हैं तो मॉरीशस से विश्व हिंदी समाचार, सौरभ, वसंत जैसी पत्रिकाएँ हिंदी के सार्वभौमिक विस्तार को प्रामाणिकता प्रदान कर रही हैं। संयुक्त अरब अमीरात से वेब पर प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाएँ 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' पिछले ग्यारह से भी अधिक वर्षों से लोकमानस को तृप्त कर रही हैं और दिन-प्रतिदिन इनके पाठकों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। आज हिंदी ई-सहचर, जनकृति, हस्ताक्षर जैसी सैंकड़ों ई-पत्रिकाएं अपनी वैश्विक उपलब्धता का उद्घोष कर रही हैं। अब हिंदी के अधिकांश समाचार पत्र भी गूगल पर ई-पेपर के रूप में उपस्थित है। आज के वैश्विक फलक पर हिंदी स्वयं को एक संपर्क भाषा, प्रचार भाषा और राजभाषा के साथ-साथ वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करती जा रही है। हिंदी अपनी सरलता और सुगमता के कारण हमेशा से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है और इसलिए आज पूरे विश्व में भारत की संस्कृति को जानने और जानने की इच्छा लोगों में है।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी विश्व बंधुत्व, सहयोग, परस्पर स्नेह व आदर, परोपकार, दया, क्षमा आदि अद्वितीय गुणों का प्रचार-प्रसार करके समस्त विश्व को भारतीय संस्कृति के मूल भावों से परिचित करवाते हुए भारतीयता का परचम लहरा रही है।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

डॉ अपर्णा सक्सेना
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

# हिंदी मेरी अभिव्यक्ति

मन के भावों की अभिव्यक्ति
करती मेरी हिंदी है
मेरी भारत माता के
भाल पर लगी ये बिंदी है
सहज है सुनने में
समझ आसानी से आती है
मेरे प्यारे देश में सबकी राजभाषा ये कहलाती है
जन-जन की वाणी है ये
पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण
हर घर में महकती है ये
ये मेरी आन मेरी शान
मेरे देश का अभिमान है
फले-फूले और छू ले आसमान
ऐसा प्रयास ही इसका सम्मान है

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्रीमती संगीता यादव
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, अलीगंज, लखनऊ

# केन्द्रीय विद्यालयों में राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग

'भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता, अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।'- श्री नरेन्द्र मोदी, मा. प्रधानमंत्री

हिंदी को एक सक्षम और समर्थ भाषा बनाने में अलग-अलग क्षेत्र के लोगों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। यह आप सबके प्रयासों का ही परिणाम है कि वैश्विक मंच पर हिंदी लगातार अपनी मजबूत पहचान बना रही है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय है, जिसमें हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा में भी शिक्षा प्रदान की जाती है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन अपने अधीनस्थ कार्य कर रहे केन्द्रीय विद्यालयों को निर्देशित कर राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों को शत प्रतिशत लागू कराने का प्रयास कर रहा है। परिणाम स्वरुप केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी राजभाषा के कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए।

भारत एक बहुभाषी देश है, परंतु हमेशा से ही हिंदी भारत में आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक संपर्क माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती रही है। हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधे रखने की क्षमता रखती है। हिंदी की इन्हीं सब विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए संविधान सभा ने हिंदी के पक्ष में अपना फैसला दिया। 14 सितंबर 1949 के दिन भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किए जाने का निर्णय संविधान सभा द्वारा किया गया और इसी कारण प्रतिवर्ष 14 सितंबर को देशभर में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। संविधान में अनुच्छेद 343 से लेकर अनुच्छेद 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लेख किया गया है। अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

हिंदी भारत संघ की राजभाषा के रूप में एक विशाल जनसमुदाय की भाषा है। इतना ही नहीं, वर्तमान समय में हिंदी विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है और 'ग्लोबल लैंग्वेज' के रूप में अपनी पहचान बनाने की ओर अग्रसर है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सरकारी कार्यालयों और केंद्रीय सरकार के अधीन कंपनियों आदि में अधिक प्रभावी ढंग से किए जाने के लिए केंद्रीय सरकार ने 1976 में राजभाषा अधिनियम 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा 4 के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कई नियम बनाए हैं। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में सुचारू रूप से राजभाषा संबंधी नियमों का अनुपालन कर सकें, इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण नियमों को जानना आवश्यक प्रतीत होता है -

1.राजभाषा नियम 1976 के अनुसार पूरे भारतवर्ष को भाषाई दृष्टि से हिंदी में कामकाज करने की सुविधा हेतु तीन भागों में बांटा गया है। क्षेत्र - 'क', 'ख' और 'ग'। 'क' क्षेत्र में हिंदी भाषी' क्षेत्र के रूप में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड के राज्य तथा दिल्ली एवं अंडमान निकोबार द्वीप समूह संघ शासित क्षेत्र को मान्यता दी गई है। इन क्षेत्रों की मुख्य भाषा एवं राजभाषा हिंदी है।

क्षेत्र 'ख' में गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव, दादरा और नागर हवेली संघ राज्य क्षेत्र शामिल है।

क्षेत्र 'ग' में क्षेत्र 'क' और 'ख' में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं।

2. राज्य आदि और केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि -

(क) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य संघ, राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य संघ, राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्र आदि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिंदी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

(ख) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्र आदि मामूली तौर पर हिंदी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

(ग) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

इसके अतिरिक्त क्षेत्र 'ग' में केंद्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार के कार्यालय न हों) या व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में भी भेजे जा सकते हैं।

3. केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

(क) केंद्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिंदी अंग्रेजी में हो सकते हैं।

(ख) केंद्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केंद्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्य साधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर, अवधारित करे।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

(ग) क्षेत्र 'क' में स्थित केंद्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खंड (क) या खंड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालय से भिन्न हैं, पत्रादि हिंदी में होंगे।

(घ) क्षेत्र 'क' में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या क्षेत्र 'ग' में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं।

(ङ) क्षेत्र 'ख' या क्षेत्र 'ग' में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं परंतु जहाँ ऐसे पत्रादि -

(i) क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' के किसी कार्यालय को संबोधित है वहाँ, यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा।

(ii) क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है, वहाँ उनका दूसरी भाषा में अनुवाद उनके साथ भेजा जाएगा।

4. हिंदी में प्राप्त पत्र आदि के उत्तर - नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिंदी में पत्रादि के उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

5. हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग - अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा।

6. केंद्रीय सरकार के कार्यालय में टिप्पणी का लिखा जाना

(1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पणियां मसौदा हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

(2) केंद्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की माँग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

7. राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 में अत्यंत महत्वपूर्ण प्रावधान यह है कि प्रत्येक केंद्रीय सरकार के कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियम के उपबंधों का समुचित पालन किया जा रहा है और इनके सुनिश्चित अनुपालन के लिए प्रभावकारी जांच बिंदु निर्धारित करें।

8. नियम 5 के अनुसार यह प्रावधान किया गया है कि सरकारी कार्यालय से जारी होने वाले परिपत्र, प्रशासनिक रिपोर्ट, कार्यालय आदेश, अधिसूचना, करार, संधियों, विज्ञापन तथा निविदा सूचना आदि अनिवार्य रूप से हिंदी -अंग्रेजी द्विभाषी रूप में जारी किए जाएंगे और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की जिम्मेदारी होगी कि वह यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं अथवा नहीं।

9. केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टर, उनके प्रारूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।

10. केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी:

राजभाषा के विकास के लिए हमें पूरे मनोयोग, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं समर्पण भाव से कार्य करना है।

श्री चंद्रभूषण प्रकाश वर्मा

प्राचार्य

केन्द्रीय विद्यालय, गोमतीनगर, लखनऊ

# नारी शक्ति को नमन

नारी अबला थी ही नहीं।

सृष्टि की रचयित्री सर्वदा थी यही।।

पुरुष प्रधान समाज के दंभ ने भ्रम फैलाया।

नारी ने अवांछित वर्जनाओं को तोड़कर इन्हें झुठलाया है।

एक ही समय में माँ, पत्नी, बहू व बहन का फर्ज निभाया।

जल-थल-नभ में सर्वत्र अपने वर्चस्व का परचम लहराया।।

दुर्गावती, अहिल्याबाई, झाँसी की रानी हैं सबला के ज्वलंत प्रमाण।

बेगम हजरत महल, एनी बेसेंट ने भी बढ़ाया देश व महिलाओं का मान।।

शिक्षा, राजनीति, समाज व देश सेवा में है सर्वत्र इनकी सक्रिय भागीदारी।।

पुनः भारतीय संस्कृति में पूजित होगी ऋग्वैदिक नारी।।

एक चक्र पर रथ संचालन कभी न संभव होगा।

बिन महिला-सम्मान देश का कभी भला नहीं होगा।

भारत राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर है प्रतिपल।

धर्म-कर्म के क्षेत्र में महिला की साझेदारी है अविचल।।

अवसर दो समता का इनको, फैले जग उजियाला।

अवसर दो समता का इनको, फैले जग उजियाला।।

श्री शिव किशोर पाण्डेय

प्राचार्य (सेवानिवृत्त)

केन्द्रीय विद्यालय, बाराबंकी

# प्रकृति और विज्ञान

प्रकृति और कुछ नहीं, विधाता की ही अनुपम सृष्टि।
यह दिखती वैसी, जिसकी जैसी हो दृष्टि॥
प्रकृति की अनुपम कृति मानव और महामानव है।
अद्भुत ज्ञान और कौशल से लहराया परचम है॥
जल, थल और अनंत व्योम में अप्रतिम कार्य किए हैं।
विश्व समाहित किया एक टैब में।
यह क्या कम अचरज है॥
पर चिंता है आज, मनुज कैसा कर रहा विकास।
इस विकास से संकट में है जीवन की ही आस॥
ज्ञान और विज्ञान गर्व में, प्रकृति हो रही नष्ट।
इसीलिए जन -जन पीड़ित है और झेलता कष्ट॥
काट रहा है डाल वही जो है उसका अवलंब।
होगी तभी सुरक्षित प्रकृति।
यदि सोचे अविलंब॥
प्राच्य- ज्ञान औ नव विज्ञान का होवे अप्रतिम योग।
प्रकृति के आंचल में मानव।
नित कर रहा नवीन प्रयोग॥
सभी सुखी और सभी निरामय दूर रहेंगे रोग।
जीवन का उद्देश्य नहीं है केवल सुख का भोग॥

डॉ. नीरज बाबू
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, आई.वी.आर.आई., बरेली

# कर्म

एक देश के अंग अनेक,

राज्य अनेक ढंग अनेक;

व्यवसाय परपंच अनेक,

जीत अनेक जंग अनेक;

इच्छा अरु विश्वास अनेक,

हर्ज़ अनेक मर्ज अनेक।

जम्हूरी सत्ता में एकी,

औ सम्मान रहेगा तब ही;

ज़ुबाँ मिली है बाज़ू में भी,

जब पाएंगे शक्ति सभी ही;

उत्तरदायी अभिनव उत्तम,

करेंगे मिलकर कर्म अनेक;

खुशहाल मुकम्मल राष्ट्र बनेगा तभी,

जब रहेंगे संग अनेक।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्री अरविन्द कुमार राय

प्राचार्य

केन्द्रीय विद्यालय, माती

# देश की भाषा, हिंदी भाषा

बहुत ही सरल,  सहज, सुगम, वैज्ञानिक भाषा है हिंदी
भारतीयों के जीवन मूल्यों, साहित्य, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक है हिंदी
विश्व में तीसरी सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा है हिंदी
भारत की राजभाषा है हिंदी।

अनेक राज्यों व संघ शासित क्षेत्रों की प्रमुख भाषा है हिंदी
संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल बाइस भाषाओं में एक भाषा है हिंदी
अनुवाद की ही नहीं, संवाद की भी भाषा है हिंदी
मौलिक सोच और स्वतंत्र लेखन की भाषा है हिंदी।

क्षेत्रीय भाषाओं से इसका बैर नहीं
विदेशी भाषाओं से इसका बैर नहीं
अनेकता में एकता का भाव रखती है हिंदी।

हिंदी तो बस इतना चाहे, यह भारत के करोड़ों लोगों की संप्रेषण भाषा बन जाए
भाषा कौशल के चारों रूप - श्रवण, वाचन, पठन, लेखन सबके साथ हम हिंदी अपनाएं
हिंदी को अत्यधिक प्रयोग में लायें
केवल सितंबर माह में ही नहीं
हर माह हम हिंदी में अपने मन के भाव बताएं।

श्रीमती मधु बाला
उप प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, आर.आर.सी., फतेहगढ़

# पुस्तक समीक्षा: गीतांजलि श्री द्वारा रचित 'रेत समाधि'- लेखन की हर सरहद को तोड़ता उपन्यास

'रेत समाधि' (Tomb of Sand) देश-दुनिया में छाया यह उपन्यास हिंदी के पाठकों की रुह से नाता जोड़ लेता है। गीतांजलि श्री (Geetanjali Shri) द्वारा हिंदी में लिखे गए इस उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद 'टूम्ब ऑफ सैंड', इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह हिंदी साहित्य के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। हिंदी की अमूमन लिखाइयों में किसी नए क्राफ्ट, नए शिल्प या बुनाई के खेल कम ही होते हैं। लेकिन इस किताब को सब बंधन को तोड़ देने के बाद ऐसे लिखा गया है जैसे कि मन सोचता है।

कोई किताब आपको पुराने दिनों की दुनिया में झम्म से ले जाए, वही दरवाज़ा, वही लड़की-लड़कौरी-सी अम्मा, जिनके बूढ़े बदन में पंद्रह साला लड़की बसे। जो चलते न चलते झपाझप कूदने-उड़ने लगे और आप अम्मा बन जाएं और अम्मा बन जाए किशोरी। इस उलट झापे में जीवन रिवाइंड हो, कि चलो एक बार फिर बीतते हैं, कि पहली दफ़ा कुछ चूक-सी रह गई थी, कुछ जल्दीबाज़ी भी, अब इस बार ज़रा फिर से करते हैं जीवन के हिसाब-किताब। रेत समाधि ऐसा उपन्यास है जिसका शिल्प बंधे-बंधाए लीक को अनावश्यक करता एक सरल प्रवाह में बहता है। इसका फॉर्म कहानी और पात्र के परे है, घटनाओं और संवाद के परे है। पात्र अगर हैं, तो अपनी सांकेतिक उपस्थिति में, घटनाएं संदर्भ के तौर पर, संवाद हैं, तो एकालाप के रूप में और उन सब को लेकर एक कैनवस रंगा गया है। छोटी रोज़मर्रा की घटनाओं और अनूठे बिंब की उंगली पकड़ मन के बीहड़ गहरे अतल में उतर जाने की कथा है, जहां कभी आसमान है, घर है, चिड़िया है, तो कभी अंधेरा, बेचैनी और हाहाकार, कभी दुख, तकलीफ़ है...

तो बस यूं कहें कि यह किताब एक पूरा मन है, भरा-पूरा... उतना ही खाली, जितना होना चाहिए और उतना भरा, जिससे कि खाली का खालीपन ढनढन बोले, उसके बोल गूंजे। शरीर के भीतर अनुगूंज ऐसे विचरे, जैसे आसमान में चक्कर काटता कोई बाज़... गोल गोल लगातार...अम्मा कौन हैं, बेटी, रोज़ी? सब स्त्रियां हैं, लड़कियां, एक कुछ पुरुष भी, माने स्त्री के भीतर पुरुष मन या कुछ पुरुष का-सा शरीर भी। और जो पूरी स्त्री है, मां है, पत्नी से ज़्यादा प्रेमिका, उसके मन में कोई चंचल छोकरी है, कोई उद्दंड पुरुष। फिर मन भी अपनी मनमानी करने वाला मन। अनवर की छाती पर सिर रख ठुमरी गा देने वाला मन, जीवन जी चुकने के बाद फिर जी लेने वाला मन। अपने मन की करने वाला मन। एक स्त्री से ज़्यादा उसका मन है, स्त्रियों का सामूहिक मन। उस अर्थ में फीमेल इमोशनल जेंडर का प्रतिनिधित्व करता हुआ, बाहरी से ज़्यादा भीतरी। उसकी वर्जनाएं, उसकी सोच, उसका मन, सब किसी कंडीशनिंग के भीतर कैद मन है, जो कई बार स्थूल होता है, मूर्त होता है। फिर बाज़ वक्त किसी ऐसी खिड़की से खट बाहर निकल जाता है, इतना फैल जाता है कि निस्सीम हो जाता है। ऐसा है अम्मा का मन, उसकी दुनिया। ऐसी है औरत की अंतरंगी दुनिया।

एक अमूर्तन की दुनिया होती है। एक पक्की मूर्त... ऑब्वियस, लिनियर। नेपथ्य का कोई गोशा-रेशा नहीं, लेकिन सब प्रत्यक्ष हो ऐसा तो किसी सूफ़ी-संत ने भी वादा करार नहीं किया। अपने मन तक की हमको खुद ख़बर नहीं होती। अपने जीवन और आने वाली सांस तक नियंत्रण के बाहर है। सरहद के पार का धुंधलका है, नो मेंस लैंड है। तो कैसी बुनकारी से उसकी परत दर परत दुनिया खड़ी की जाए कि बाहर सब सुथरा हो, साफ हो, पीछे के धागे सिर्फ आपके हाथ हो, ऐसे अमूर्तन को रच देना मन के बड़े अमीर फैले कैनवस की सजावट है। रेत समाधि ऐसे अमूर्तन के ढांचे पर मन और दुनिया का विशाल संसार रचती है। साधारण रोज़मर्रा की घटनाओं में असाधारण तत्वों से एक ऐसी बुनावट है, जिसकी कारीगरी बहुत पास से देखी नहीं जा सकती। उसे देखने के लिए कुछ दूरी ज़रूरी है। उस दूरी से तस्वीर का पूरापन अपने समूचे मायने में दिखता है, लेकिन जब तक ये दूरी नहीं आती, अम्मा अपने साधारणपने में, अपने दिमागी उलझावों में एक अजीब किस्म के भोलेपन से ग्रसित दिखती है।

यह सच है कि ज़रूरी नहीं कि सिर्फ वाह्य कहन की कथा ही हो, यह भी ज़रूरी नहीं कि पात्र किसी घटना से बंधे कोई व्यवहार करें, या यह कि भावों के रस से डूबा सराबोर कोई प्रसंग हो। लेकिन यह तो सच है कि भीतरी गूढ़ रहस्यों की यात्रा में कोई तार, कोई तरंग का स्पर्श हो। रेत समाधि में, कई-कई बार होता है, लेकिन कुछ बार पकड़ में आने के पहले ही छूट-छूट भी जाता है, भीतर गहरे हृदय को छूने के ठीक पहले कहीं और चला जाता है। बावज़ूद इसके पढ़ते समय हैरानी भरी खुशी होती है, लगता है कोई साझा तार झनझना उठा या फिर कोई शार्प इनसाइट चमत्कृत कर गया।

भाषा एक टूल है, यह मीडियम ऑफ एक्स्प्रेशन है। उसको बरतने की एक कला होती है और अलग तरीके से बरतने का अलग हुनर। ज़ुबान की मिठास, मीठी बोली, शब्दों को उच्चारने का स्वाद, उस उच्चारने में नई ध्वनि ईज़ाद करने का सुख, उसको बोलने, ज़ोर से बोलने का संगीत। रेणु, राही मासूम रज़ा, श्रीलाल शुक्ल को पढ़ते कितनी ही बार हुआ है कि रुककर फिर-फिर ज़ोर से बोलकर, पढ़कर उसके संगीत में उल्लास का एहसास होना, ऐसा कुछ रेत समाधि के साथ भी होता है। बहुत से शब्द हैं, जिन्हें गीतांजलि ऐसे बरतती हैं, इतनी सहजता से, जैसे पुराने दिन बचा ले रही हों, जैसे उनको इस्तेमाल भर करने से कोई आंगन, कोई ठीया, कोई पुराने नीम के पत्ते से भरता सहन, कोई पुराना बसा भरा घर फिर से गुलज़ार हो जाए। उनकी भाषा में तरलता है। उनके वाक्य छोटे-छोटे बनते हुए एक सिरे से दूसरे सिरे तक खूबसूरत चकरघिन्नियों में घूमते हैं। इस घुमाई में ताज़गी है, भोलापन है। उनके शब्द बेहद अलग बिंब रचते हैं और कुछ ऐसे प्रवाह से रचते हैं कि सब सहज स्फूर्त बहता है, बिना हड़बड़ी के, एक नादान भोलेपन से, जैसे बच्चे के हाथ में चरखी।

यह इस भाषा का कमाल है कि कई हिस्से पहली पढ़ाई में पानी की तरह फिसल जाते हैं और इसके भाव सतह पर फूलों जैसे तैरते हैं। लेकिन कुछ हिस्से जो चैप्टर की शुरुआत में अमूर्तन का संसार रचते हैं, उसकी बुनावट ही कुछ ऐसी है कि ठहरकर इंट्रोस्पेक्शन किया जाए, कि ठहर कर डूबने का एहसास लगातार होता रहे।

हिंदी की अमूमन लिखाइयां किसी पुराने धज को बचाए चलती हैं। विदेशी लिखाइयों की तुलना में एक ठहरी दुनिया बार-बार जैसे रिपीट होती चलती है। किसी नए क्राफ्ट, नए शिल्प या बुनाई के खेल कम ही होते हैं। मुझे हिंदी में बहुत सी किताबें याद आ रही हैं, जो इस भीतरी संसार की महीन कारीगरी को बहुत ठहर कर सांस दर सांस खोलती हैं, जैसे कोई विलंबित आलाप... जो पूरे दिन चलता हो, पूरी रात चलती हो, सौ पन्ने चलती हो या उम्र भर। गीतांजलि श्री की लेखनी में वही आस्वाद, वही ठहराव है। कोई खेल नहीं, कोई दिखावा नहीं, कोई सच का पाखंड नहीं। ऐसा लगता है मानो गीतांजलि श्री ने तय किया हो कि इस किताब में वो पारंपरिक तत्व नहीं होंगे। फिर सब बंधन को तोड़ देने के बाद उन्होंने ऐसे लिखा जैसे कि मन सोचता है, यहां से उड़कर वहां, फिर कहां-कहां।

शुरुआत में ऐसा लगता है कि कोई साहजिक बहाव है, बिना किसी तैयारी के, फिर क्रमशः ये बात अंदर पैठती है कि इस सेमल के बीज के से जंगली बहाव में भी एक बीहड़ और महीन किस्म का नियंत्रण है। एक ऐसा रियाज़ है, इसके पीछे जो अपनी सहज सरलता में उसके पीछे के काम को अदृश्य बना देता है। बहरहाल, गीतांजलि श्री जो नहीं कहती और नहीं सोचती या जिसे उन्होंने नहीं लिखा कहा, उस सब अनकहे की भी एक कहानी है, जो बेहद महत्वपूर्ण है। तस्वीर में जो नहीं दिखा, उसकी अहमियत, उसका भाव भी एक तरीके से सिलसिलेवार ठोस तरीके से उभरता है। जैसे बेटी का अम्मा के साथ का रिश्ता, जो एक विढ़ के बावज़ूद बड़ा तरल-सा बहता है, जैसे किसी बच्चे को शामिल कर रही हो, या फिर रोज़ी को न बर्दाश्त करते रहने, फिर रज़ा मास्टर के स्नेह में भी पड़ जाना, या एक अनकहा-सा कुछ सिगरेट के धुंए-सा तिरते रहना, उसने अपनी ज़िंदगी ऐसी बनाई कि अपनी मर्ज़ी का जीवन हो, और अम्मा और अनवर की कहानी को ऐसे स्वीकार कर लेना, जैसे अंततः माता-पिता अपनी प्रेम में भाग गई बेटी को मान स्वीकार लेते हैं। इनका जीवन कितने अप्रत्यक्ष तरीके से फेमिनिस्ट है, कितने सहज-सरल तरीके से, जैसे ऐसा होना एक वे ऑफ़ लाइफ है। कोई क्रांति, कोई मोर्चा नहीं है, बस जीवन है। कोई नाटक-नौटंकी-ड्रामा नहीं है।

और हां, यहां सौंदर्यबोध को लेकर कुछ अप्रत्याशित नवीन स्थापनाएं भी हैं। मरीचिका के बारे में यही हमारी एक सामान्य समझ है कि वह रेगिस्तान में धोखे की तरह होती है। पर उपन्यासकार उस समझ के आगे की बात करती हैं, जब वे कहती हैं-

'पूछ खुद से, मूरखमन, कि मरीचिका से ज्यादा चमक कहां और वो क्या झूठा, उसके नीचे पृथ्वी ठोस नहीं है क्या? उसके ऊपर हवा नहीं गुंजान? और हम जब उसे देखे हैं, उम्मीद, लालसा और कविता हममें नहीं अंखुआए क्या?'

रिश्तों के ताने-बाने में उपन्यास कई मुद्दों पर कटाक्ष करता चलता है। समाज की स्त्री से उम्मीदें, उसका तय रास्ते से भटकने पर उपजने वाला टकराव, पितृसत्ता, मस्कुलिनिटी, फेमिनिस्म, राजनीति, पर्यावरण, सांप्रदायिकता, ट्रांसजेंडर ईशूज़, ब्रेन ड्रेन, पार्टीशन, भारत-पाकिस्तान पॉलिटिक्स, और हां.....प्रेम भी।

अवश्य पढ़ें !!

श्रीमती मीता गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# हिंदी भाषा के उत्थान में सोशल मीडिया की भूमिका

"स्मार्ट फ़ोन और सोशल मीडिया हमारे ब्रह्माण्ड का विस्तार करते हैं। हम दूसरों के साथ जुड़ सकते हैं और पहले से कहीं ज़्यादा आसानी और तेज़ी से जानकारी एकत्र कर सकते हैं।" - डेनियल गोलमैन

किसी ने सच ही कहा है कि अगर हम समय के साथ नहीं बदलेंगे तो समय हमें बदल देगा। आज हम जिस दुनिया में जी रहे हैं, उसमें मीडिया के प्रभाव से इंकार नहीं किया जा सकता। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जिसमें मीडिया अपना अहम किरदार न निभाता हो। अगर हम हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार की बात करें तो निश्चित तौर पर मीडिया ने इसमें बहुत ही सक्रिय भूमिका निभाई है। आज हिंदी रूपी नन्हा पौधा न केवल भारत में बल्कि संपूर्ण विश्व में एक वट वृक्ष के रूप में अपनी जड़े फैला चुका है। नि:संदेह इसका श्रेय सोशल मीडिया को जाता है जिसके कारण हिंदी अपनी समस्त भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं भाषाई सरहदें लांघ कर पूरे विश्व में अपना वर्चस्व स्थापित कर चुकी है। हिंदी के विस्तारीकरण में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

अगर आज हम भारतीय मनोरंजन उद्योग की बात करें तो हिंदी भाषा का कोई भी सानी नहीं है। चाहे वो हिंदी फ़िल्म हो, गीत हो, धारावाहिक हो या समाचार हो, इनकी उपादेयता और जन मानस में इनकी लोकप्रियता किसी भी परिचय की मोहताज नहीं है। हिंदी फ़िल्मों ने न केवल भारतवर्ष अपितु संपूर्ण विश्व में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना रखी है। हिंदी धारावाहिक अपनी विषय वस्तु की व्यापकता के कारण भारत के अलावा अन्य देशों में भी लोगों की पहली पसंद बन चुके हैं। हिंदी चैनलों और कार्यक्रमों के विस्तार और सहजता के कारण आज अहिंदी भाषी न केवल हिंदी समझने लगे हैं बल्कि धाराप्रवाह हिंदी बोल भी रहे हैं। ऐसी कोई जगह और क्षेत्र नहीं है जहां हिंदी मनोरंजन उद्योग न सिर्फ धूम मचा रहा हो बल्कि राष्ट्रीय एकता का द्योतक भी सिद्ध हो रहा हो।

अगर हम समाचार पत्रों की बात करें तो पता चलता है कि आज लोगों में हिंदी समाचार पत्रों की लोकप्रियता में काफी इज़ाफा हुआ है। सुबह की चाय की चुस्की के साथ समाचार पत्र का साथ वैसा ही है, जैसा चोली और दामन का। हिंदी भाषा के समाचार पत्रों की मांग को देखते हुए आज प्रचुर मात्रा में अंग्रेज़ी और दूसरी भाषाओं के समाचार पत्रों का हिंदी संस्करण भी मौजूद है।

हिंदी भाषा की उन्नति में एफ एम रेडियो एक बहुत सुदृढ़ स्तंभ के रूप में खड़ा है। इसमें प्रायः संवाद हिंदी में ही होते हैं। आकाशवाणी ने समाचार, संगीत, विज्ञापन आदि को दुनिया के कोने-कोने में पहुंचा कर, हिंदी भाषा को संपूर्ण विश्व में स्थापित करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। फिर चाहे गाने हों, सिटी न्यूज हो, रेडियो जॉकी हों, सुहाना सफर विद अन्नू कपूर हो या फिर रेडियो मिर्ची, सब अपनी भावरसता और मधुरता के कारण लोगों के मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ने में सक्षम हैं।

आज से कुछ वर्ष पूर्व यह माना जाता था कि जिसको अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है वह मोबाइल और कंप्यूटर नहीं चला सकता। आज लोग न केवल हिंदी में संदेशों का संप्रेषण करते हैं, बल्कि नए-नए ऐप डाउनलोड करके हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके इसके विकास में अपना अमूल्य योगदान भी दे रहे हैं। यूनिकोड की सुविधा ने आज हर उस व्यक्ति को, जो कंप्यूटर पर हिंदी नहीं लिख सकता था, उसे भी हिंदी लिखना सिखा दिया है। हिंदी टाइपिंग की क्लिष्टता को यूनिकोड ने बहुत सरल कर दिया है। यहां तक कि वॉइस टाइपिंग के ज़रिए हम अपनी बात दूसरों तक हिंदी में पहुंचाने में सक्षम हो गए हैं।

अगर हम आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि डिजिटल दुनिया में आज हिंदी की मांग अंग्रेज़ी की तुलना में कई गुना बढ़ी है। हिंदी के प्रयोग को जो गति मोबाइल फ़ोन ने दी है, उसकी मिसाल अनूठी है।

हिंदी के वैश्वीकरण में इंटरनेट के अमूल्य योगदान से भी हम अनभिज्ञ नहीं हैं। आज इंटरनेट पर 15 से ज़्यादा सर्च इंजन मौजूद हैं। चाहे वेबसाइट्स हों या ब्लॉग्स, ट्विटर हो या फेसबुक, गर्ज़ ये कि ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं बचा है जो हिंदी के व्यापक प्रचार एवं प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका न निभा रहा हो। आज सोशल मीडिया पर लोग हिंदी का प्रयोग शर्म से नहीं, गर्व से करते हैं। आज कमेंट और चैट बॉक्स में भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग देखने को मिल रहा है।

सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा को और भी विस्तारित करने का कार्य किया ब्लॉगर्स ने। हिंदी ब्लॉगर्स की संख्या पिछले कुछ सालों में लगातार बढ़ी है। वहीं हिंदी ब्लॉगिंग के ज़रिये लोगों को विचारों की अभिव्यक्ति का बेहतरीन मंच मिला है।

ऐसे क्षेत्र जिन पर कभी आंग्ल भाषा का एकाधिकार समझा जाता था आज उन क्षेत्रों में भी हिंदी अंग्रेज़ी के साथ अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है। आज अधिकतर व्यावसायिक कंपनियां अपने उत्पादों का विज्ञापन हिंदी में देने को आतुर हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि हिंदी भाषा में अपने विचारों को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है।

किसी भी बदलाव को स्वीकार करना आसान नहीं है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि जब भी कोई रीति रिवाज, संस्कृति, भाषा आदि अपने पुराने तटबंधों को तोड़कर नये क्षेत्र में प्रवेश करती है तो उसको स्वीकार करना कठिन ही नहीं अपितु असहज हो जाता है। हिंदी अपनी विशालता, सरलता और व्यापकता के कारण अपने अंदर किसी भी भाषा को समाहित करने की क्षमता रखती है और वह ऐसा कर भी रही है। परिणामस्वरूप हिंदी इस समय स्वीकार्यता के राजमार्ग पर सरपट दौड़ रही है और हिंदी अश्वमेध के घोड़ों को रोक पाना किसी के बस में नहीं है। मीडिया इस दौड़ को और गतिशील बना रहा है। सफलता के नए आयामों को छूने के लिए हिंदी और मीडिया को एक दूसरे के पूरक बनने की नितांत आवश्यकता है। अतः यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार के लिए मीडिया की ज़रूरत है, उसी तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी की आवश्यकता है।

जय हिंद। जय हिंदी।

श्रीमती नफीस फात्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय, कानपुर कैंट (द्वितीय पाली)

# हिंदी भाषा में रोज़गार की संभावनाएं

आज जैसे-जैसे हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे हिंदी के क्षेत्र में रोज़गार की अपार संभावनाओं के द्वार खुलते जा रहे है। इस समय जीवन के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ हिंदी का अध्ययन करने वाले युवा अपना भविष्य सँवार सकते हैं। हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों और संस्थाओं में हिंदी के प्रयोग में काफी वृद्धि हुई है।
अब हम जीवन के उन तमाम क्षेत्रों पर नज़र डालते हैं, जिसमें हिंदी पढ़ने वाले छात्र कैरियर चुनकर अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं, साथ ही अपनी राजभाषा के संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार का पुण्य भी प्राप्त कर सकते हैं।

## सोशल मीडिया में अवसर

फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब तथा व्हाट्सएप जैसे अनुप्रयोगों में तो अब हिंदी का ही दबदबा है। गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियों ने भी हिंदी में बहुत बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया है। यूट्यूब पर अपना चैनल बना कर आप एक बड़े हिंदीभाषी वर्ग को अपना दर्शक बना सकते हैं और हर महीने लाखों रूपये कमा सकते हैं।

## पत्रकारिता के क्षेत्र में अवसर

हिंदी का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए पत्रकारिता का क्षेत्र रोज़गार के लिए एक अच्छा विकल्प है, जहां परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली युवाओं के लिए अपार संभावनाएं हैं। वर्तमान में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले अखबार और देखे जाने वाले चैनलों में से सबसे अधिक हिंदी भाषा वाले अखबार और चैनल ही हैं। इस क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक है कि भाषा पर आपका अधिकार हो और आप अपनी बातों को सरलता और सहजता से व्यक्त कर सकें, जिसमें हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन विशेषरूप से लाभकारी है। पत्रकारिता में आने की इच्छा रखने वाले युवाओं को अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं के प्रति सजग और संवेदनशील होना भी बहुत जरूरी है। पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति दूसरे व्यावसायिक विषयों को पढ़ने वालों की तरह ही पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर बनाकर अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

## राजभाषा अधिकारी बनकर हिंदी की सेवा करने का अवसर

केंद्र सरकार के संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है, जो अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा को बढ़ावा देने का कार्य करते हैं। यदि कोई हिंदी में स्नातकोत्तर है और अंग्रेज़ी में स्नातक है, तो राजभाषा अधिकारी के रूप में अपना कैरियर बना सकता है। यहाँ आप ऊँचे वेतनमान के साथ हिंदी भाषा के क्षेत्र में कार्य करके हिंदी भाषा तथा देश की सेवा में योगदान दे सकते हैं।

## अध्यापन के क्षेत्र में रोज़गार के अवसर

हिंदी का अध्ययन करने वालों के बीच अध्यापन एक पारंपरिक कैरियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है। यहाँ उच्च शिक्षण संस्थानों से लेकर प्राथमिक स्तर तक शिक्षण के अवसर योग्यतानुसार उपलब्ध रहते हैं और इसे एक अच्छा कैरियर माना जाता है। हिंदी विषय में स्नातकोत्तर करने के उपरांत समय-समय पर आयोजित होने वाली 'राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा' में सम्मिलित हुआ जा सकता है। इसमें अधिकतम अंक प्राप्त करने वालों को 'जूनियर रिसर्च फेलोशिप' प्रदान की जाती है, जिसके माध्यम से शोधकार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रतिमाह अच्छी खासी रकम छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। वहीं परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को महाविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति का अवसर मिलता है।
हिंदी विषय में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी केन्द्रीय विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालयों और राज्यों के माध्यमिक

विद्यालयों में शिक्षक बन सकते हैं। इसके लिए उन्हें प्रतियोगी परीक्षा में सफल होना पड़ता है। जिन छात्रों ने स्नातक के साथ बी.एड. किया है, वे प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक के लिए आवेदन कर सकते हैं। स्नातक के बाद बी.टी.सी,जे.बी.टी अथवा डी.एलएड./ बी.एलएड. करने वाले छात्र प्राथमिक विद्यालयों में भी अध्यापक बन सकते हैं।

अनुवादक/दुभाषिया के क्षेत्र में अवसर

अनुवाद का क्षेत्र बहुत बड़ा है। दुनिया भर में जैसे-जैसे हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है वैसे-वैसे अनुवादकों और दुभाषियों की मांग बढ़ती जा रही है। अनेक देशी-विदेशी मीडिया एवं पर्यटन से जुड़े संस्थानों और बड़े-बड़े होटलों में अनुवादकों और दुभाषियों की अच्छी-खासी मांग है। युवाओं को चाहिए कि अपनी इच्छानुरूप अवसरों को तलाश कर इस क्षेत्र में अपना भविष्य सुरक्षित करें।

पर्यटन के क्षेत्र में अवसर

केंद्र एवं राज्य सरकारें द्वारा पर्यटन के क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए नित नए कदम उठाये जा रहे है। पर्यटन के क्षेत्र में हिंदी के साथ अंग्रेज़ी का भी ज्ञान रखने वाले अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं।

रेडियो जॉकी और समाचार वाचक के रूप में अवसर

रेडियो जॉकी एक ऐसा कैरियर है जिसमें आपकी आवाज़ देश-दुनिया में सुनी जाती है। ऑल इण्डिया रेडियो के साथ ही साथ स्थानीय रेडियो स्टेशन पर समाचार वाचक के रूप में काम कर सकते हैं। आज एफ एम चैनलों के खुल जाने से इस क्षेत्र में रोज़गार की संभावनाएं और बढ़ गई हैं। प्रस्तोता अमीन सायानी का नाम लोगों को आज भी याद है। आज भी रेडियो मिर्ची पर आर.जे. नवेद का नाम हमेशा ट्रेंडिंग रहता है। बच्चा-बच्चा इस नाम से परिचित है। यह तो मात्र एक उदाहरण है। ऐसी बहुत सी प्रतिभाएं हैं, जो इस क्षेत्र में नाम और दाम कमा रही हैं। यदि आप भी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं, आवाज़ अच्छी है और आपमें श्रोताओं का मनोरंजन करने की क्षमता है, तो यह एक अच्छा विकल्प है।

इसी से मिलता-जुलता काम समाचारवाचक का भी है। इसमें आपको दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है। बस आपको अपनी बुलंद और प्रभावशाली आवाज़ में समाचार पढ़ने होते हैं और देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी देनी होती है। इनसे संबंधित कोई प्रोफेशनल कोर्स कर लेने से काम मिलने में आसानी हो जाती है।

रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में अवसर

रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में जाने की चाह रखने वालों के पास दो विकल्प होते हैं, पहला है-'स्वतंत्र लेखन' और दूसरा है-'फ़िल्म, टीवी, रेडियो आदि संस्थानों में काम करते हुए लेखन'। हालांकि दोनों में कोई विशेष अंतर नहीं है। दोनों ही रूपों में आप काम एक ही करते हैं।
आप साहित्य की अनेक विधाओं में रचनात्मक लेखन करके शोहरत के साथ ही साथ पैसा भी कमा सकते हैं।

ब्लॉग लेखन

ब्लॉग लेखन भी इन्हीं विकल्पों का एक अच्छा उदाहरण है। इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के साथ कैरियर का भी सुनहरा अवसर है। आप अपनी पसंद का कोई विषय चुनकर इसकी शुरुआत कर सकते हैं। अच्छी खबर, साहित्य शिल्पी आदि ऐसे ही कुछ ब्लॉग्स हैं जिन्होंने हिंदी ब्लॉगिंग को नया आयाम दिया है।

हिंदी भाषा के प्रमुख शिक्षण संस्थान

हिंदी भाषा तथा मीडिया, जर्नलिज्म आदि के प्रमुख शिक्षण संस्थानों के नाम निम्नलिखित हैं, जहाँ से अपनी पसंद के क्षेत्र में अध्ययन कर हिंदी में रोज़गार के अच्छे अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं:-

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय पंचटीला, वर्धा (महाराष्ट्र)
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)
इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मास कम्युनिकेशन, जे एन यू कैम्पस (नई दिल्ली)
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई (तमिलनाडु)
आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम (आंध्र प्रदेश)
इग्नू (IGNOU), नई दिल्ली
अन्यान्य महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय

विश्वभर में हिंदी भाषा के लगातार बढ़ते प्रयोग और प्रभाव ने हिंदी में रोज़गार की संभावनाएं पैदा कर दी हैं और भविष्य में इसमें और अधिक रोज़गारपरक अवसर उपलब्ध होंगे, ऐसा निश्चित जान पड़ता है। आप अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार अपना क्षेत्र चुनकर अपना भविष्य संवार सकते हैं। हिंदी में रोज़गार के अच्छे अवसर हैं। बस आवश्यकता है, अपनी क्षमता को पहचानने की और उस क्षेत्र में सफल होने के लिए जी-जान से जुट जाने की।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्री वीरेन्द्र कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, अलीगंज (प्रथम पाली), लखनऊ

# पूर्वोत्तर भारत में हिंदी

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हैं। जब मैं 2002 में भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में अपनी सेवाएं देने जा रहा था, तो मेरे मन में अनेक आशंकाएं थीं और सबसे बड़ी आशंका भाषा को लेकर की थी। मैंने सुन रखा था कि पूर्वोत्तर में हिंदी का चलन बहुत ज्यादा नहीं है, परंतु जब मैंने अरुणाचल प्रदेश में कदम रखा और दीवार पर एक भोजपुरी फिल्म का पोस्टर देखा, तभी से मेरे मन में भाषा को लेकर व्याप्त भ्रम दूर हो गया। वहां मुझे दिखाई दिया कि बहुत सारे लोग हिंदी को न केवल समझते हैं, अपितु काफी हद तक उसे बोलते भी हैं।

आमतौर पर पूर्वोत्तर राज्यों की गिनती हिंदीतर प्रदेशों में की जाती है। लेकिन पूर्वोत्तर के लोग भी जब अपने किसी पड़ोसी राज्य में जाते हैं, तो उनकी संपर्क भाषा हिंदी ही होती है क्योंकि हिंदी विचारों के आदान-प्रदान के लिए सबसे सरल और सशक्त माध्यम है। असम के एक हिंदी प्रेमी से जब मैंने बात की, तब उन्होंने एक ऐतिहासिक घटना का जिक्र करते हुए बताया कि पूर्वोत्तर भारत में हिंदी का वर्तमान रूप तब सामने आया, जब 1934 में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी असम आए हुए थे और वे वहां अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ की स्थापना करना चाहते थे। वे अपनी बात हिंदी में करना चाहते थे, लेकिन वहां हिंदी जानने वालों की कमी थी। तत्पश्चात असम में हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के कार्यक्रम शुरू हुए और हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत सारा कार्य किया गया।

असम के कुछ युवा काशी विद्यापीठ जैसे राष्ट्रीय संस्थानों में अध्ययन के लिए भी गए। बाद में रजनीकांत चक्रवर्ती, हेमकांत भट्टाचार्य और नवीन चंद्र जी ने हिंदी के लिए बहुत कार्य किया। इन तीनों ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा संचालित हिंदी अध्यापन मंदिर में प्रशिक्षण लिया और बाद में इन तीनों ने असम में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही समिति आगे चलकर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बनी, जो आज श्रेष्ठ हिंदी शैक्षिक संस्थानों में से एक मानी जाती है। परंतु मेरा मानना है कि असम में हिंदी के प्रचार-प्रसार का प्रमुख कारण यह है कि यहां पर बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि राज्यों के लोग न केवल आते-जाते रहते हैं अपितु काफी मात्रा में यहां पर व्यापार भी करते हैं। अब तो यहां पर धार्मिक और सांस्कृतिक संपर्क तथा वैवाहिक संबंध भी अन्य राज्यों से स्थापित होने शुरू हो गए हैं, परिणाम स्वरूप यहां पर हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारतीय हिंदी फिल्मों का भी बहुत बड़ा योगदान है क्योंकि पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में हिंदी फिल्में धड़ल्ले से देखी जाती हैं और हिंदी गानों को बड़े चाव से सुना जाता है। मैंने विगत 18 वर्षों तक पूर्वोत्तर के जिस प्राकृतिक सौंदर्य को देखा, वह निश्चित रूप से मनभावन है। असम में प्राकृतिक सौंदर्य की विविधता विद्यमान है। असम में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जो कदम उठाए जा रहे हैं, वह दिन दूर नहीं, जब हिंदी जानने वाले अधिकाधिक लोग मिल जाएंगे। वर्तमान समय में पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी पत्र-पत्रिकाएं, समाचार-पत्र इत्यादि बहुतायत में प्रकाशित हो रहे हैं और राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार निरंतर बढ़ रहा है। यह न केवल राजभाषा हिंदी के लिए सुखद स्थिति है, अपितु भारत की एकात्मकता का पुष्टिकारक है।

श्री सिद्धार्थ कुमार पाण्डेय
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, लखनऊ कैंट

# विश्व के शिखर पर हिंदी

26 मई 2022 का वह स्वर्णिम दिवस न सिर्फ मेरे जैसे साहित्य प्रेमी बल्कि विश्व में मौजूद हर एक भारतवंशी के लिए गौरवपूर्ण रहा। प्रत्येक भारतीय ने उस दिन अपनी राजभाषा का विश्व पटल पर राजतिलक होते हुए जो देखा! जी हां, मैं बात कर रहा हूं अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार की, जो वर्ष 2022 के लिए भारतीय लेखिका गीतांजलि श्री के मूल रूप से हिंदी में लिखित एवं डेज़ी रॉकवेल के द्वारा अंग्रेजी में अनूदित उपन्यास 'रेत समाधि' (टूम्ब ऑफ सैंड) को प्रदान किया गया। यह उपलब्धि अद्भुत, अविस्मरणीय, अतुलनीय और वंदनीय इस मायने में भी है कि साहित्य जगत के इतिहास में यह पहला अवसर है कि मूल रूप से हिंदी में लिखित किसी पुस्तक को अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ हो।

वैसे तो पेशे से मैं अंग्रेजी का अध्यापक हूं परंतु हिंदी से मुझे उतना ही प्रेम है, जितना मुझे जन्म देने वाली मां से है। हिंदी के प्रति मेरे मन में उतना ही सम्मान है, जितना मुझे पहचान देने वाले मेरे पिता के लिए। मेरा यह मानना है कि कोई भी भाषा श्रेष्ठ या निम्न नहीं होती -- भाषाओं में किसी तरह की होड़ नहीं होती, कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती। हां, कोई भाषा अन्य भाषाओं से ज्यादा विकसित हो सकती है, किसी भाषा की वर्तनी अधिक प्रायोगिक हो सकती है। वैश्वीकरण के इस दौर में अंग्रेजी जैसी भाषा का प्रचार-प्रसार अधिक हुआ है, परंतु हिंदी की तुलना हर समय अंग्रेजी से करना तथा हिंदी को कमतर आंकना बेमानी होगा। आखिर भाषा का उद्देश्य क्या होता है? भाषा हमारी भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम ही तो है और यदि हम अपनी मातृभाषा में सहजता और सरलता से बगैर परेशानी, बगैर पेशानी पर बल दिए अपने विचारों को व्यक्त कर पाते हैं, तो हिंदी का प्रयोग करने से गुरेज़ क्यों?

बहुभाषी होना किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में चार चांद लगाता है। विभिन्न भाषाओं का ज्ञान हमें लोगों की भीड़ में एक अलग पहचान दिलाता है। इस संदर्भ में हिंदी के अतिरिक्त हम अगर अन्य भाषाएं सीखते हैं, जानने की कोशिश करते हैं, तो उसमें कोई बुराई नहीं है, परंतु अपनी मातृभाषा हिंदी का परित्याग कर विदेशी भाषाओं का आलिंगन करना, वह भी सिर्फ इसलिए कि हम अपने आसपास मौजूद लोगों को प्रभावित कर सकें, सरासर गलत है, या यूं कहूं कि झूठी शान बघारना है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी इस बात पर बल देती है कि विद्यार्थियों को तीन भाषाओं का ज्ञान प्रदान किया जाए, जहां तक संभव हो उन्हें उनकी मातृभाषा में ही पढ़ाया जाए, तो शिक्षक होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि सबसे पहले हम स्वयं अपने देश और अपनी भाषा हिंदी पर गर्व करें और अपने विद्यार्थियों में भी हिंदी भाषा के प्रति सम्मान, आदर और गर्व की भावना विकसित करें।

गीतांजलि श्री की उपलब्धि ने विश्व को यह संदेश दिया है कि महान साहित्य का भाषा से नहीं, अपितु विचारों से, कल्पना से, संवेदना से, यथार्थ से तथा अनुभव से सृजन होता है और भारतवंशी हिंदी भाषी लोग इन गुणों से आदिकाल से ओतप्रोत रहे हैं। अंग्रेजी साहित्य में यदि शेक्सपियर हैं, उनका नाटक 'हैमलेट' है, तो हमारे देश में भी कालिदास जैसे महान नाटककार हैं और 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' जैसे नाटक हैं, अंग्रेजी साहित्य में यदि सामाजिक दर्शन में महारत प्राप्त चार्ल्स

डिकेंस हैं, उनके उपन्यास 'ओलिवर ट्विस्ट' या 'डेविड कॉपरफील्ड' हैं तो भारत में महान लेखक मुंशी प्रेमचंद हैं, उनके कालजयी उपन्यास 'गबन' और 'गोदान' हैं। आधुनिक काल की बात करें, तो विदेशी भाषाओं के जगमगाते साहित्यकार डैम गैलगट हैं, उनकी कृति 'द प्रॉमिस' है, तो हमारे भारतवर्ष के पास गीतांजलि श्री जैसी गौरवशाली साहित्यकार हैं, उनकी महान कृति 'रेत समाधि' है, जिसका लोहा आखिरकार पूरे विश्व ने मान लिया है।

अतः जिस प्रकार विश्व ने 'रेत समाधि' के रूप में हिंदी को सिर-माथे पर बिठाया है, आइए, हम सब भारतवंशी भी अपनी हिंदी को अपना सिरमौर बनाएं।

जय हिंद, जय हिंदी।

श्री धीरेन्द्र बहादुर सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय, सीतापुर (प्रथम पाली)

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# तकनीकी युग में हिंदी भाषा का विकास

हिंदी भाषा वह समुद्र है, जिसमें दूर-दराज से विभिन्न भाषा रूपी नदियां समाहित होती हैं। जिस प्रकार समुद्र के पानी में किस-किस नदी का जल है, यह पहचानना मुश्किल है, उसी प्रकार हिंदी भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्दों को पहचानना मुश्किल है।

हिंदी भाषा एक सर्वसमावेशी भाषा है। इस भाषा में संस्कृत, अंग्रेजी भाषा से लेकर अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी अपने अंदर समाहित करने की क्षमता है। तकनीकी के इस युग में हिंदी भाषा ने अपने परंपरागत स्वरूप को समय के अनुरूप ढाल लिया है। कंप्यूटर में हिंदी भाषा का प्रयोग अब सहज हो गया है। आज तकनीकी के इस युग में हिंदी को अपनाना प्रत्येक क्षेत्र में आसान हो गया है। टाइपिंग की सुविधा से लेकर वॉइस टाइपिंग की सभी सुविधाएं आज उपलब्ध हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इन नवीन तकनीकी सुविधाओं का उपयोगकर्ता सरलतम ढंग कैसे प्रयोग करते हैं।

पारिभाषिक शब्दों के विकास हेतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने विज्ञान, वाणिज्य व मानविकी के क्षेत्रों से संबंधित कई विषयों की शब्दावली तैयार की है। इसी तरह का अनुवाद-कार्य करने हेतु सरकार ने केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन किया है, जो लाखों शब्दों का अनुवाद कर चुका है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन का भी हिंदी के प्रचार-प्रसार व तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। विद्यालय में प्रयोग होने वाले विभिन्न प्रपत्र द्विभाषी अथवा हिंदी में तैयार किए गए हैं।

वह समय दूर नहीं, जब विश्व पटल पर हिंदी भाषा तकनीकी विकास के साथ अपनी एक अलग ही पहचान स्थापित कर लेगी।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्रीमती संगीता सक्सेना
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, शेखूपुर, बदायूं

# भाषा और हम

## (तेलुगू क्षेत्र की अनुभूतियाँ) (संस्मरण)

मेरी पहली पोस्टिंग 11 अगस्त 2009 को केन्द्रीय विद्यालय अनंतपुर, आंध्र प्रदेश में हुई थी। अनंतपुर रॉयलसीमा का टिपिकल तेलुगू क्षेत्र है, जो कभी राजा कृष्णदेव रॉय के शासनकाल में भाषा, ज्ञान, कला आदि का प्रमुख क्षेत्र रहा है। अब वो ठेठ तेलुगू (अपने इलाके की गँवई भाषा समझ लें) लोग.. हम टिपिकल अवधी वाले.. पूरा केर-बेर की संगति थी। उधर अपना कोई परिचित भी नहीं था कि थोड़ी मदद भी हो सके। मुझे यह लाइन बार बार याद आती थी:

"लहद में फरिश्तों से कैसे होगी गुफ्तगू मेरी,
अरब की है जुबाँ उनकी ज़बाने लखनऊ मेरी।"

खैर, बेरोजगारी की गालियाँ खाए, मरता सो क्या न करता। शुरुआत में तो जो भी दिक्कतें आतीं, पड़ोसी प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (शारीरिक शिक्षा), एमएम अहमद सर से पूछ लेता। ऐसी दुकानों को तरजीह देता, जहां सेल्फ सर्विस हो, दुकान पर अपनी जरूरत के सामान उठा लेता और अंदाजन यदि सामान ₹ 30 का होता तो ₹ 50 दे देता, फिर वह जो वापस देता रख लेता (आखिर वो कितना घपला करता, दो-चार का ही न! खैर ऐसा कभी महसूस नहीं हुआ)। ऐसा करते-करते कुछ दिनों में ही मार्किट की सामान्य समझ हो गई।

हर जगह बोर्ड्स पर कुछ इबारतें लिखी होती हैं। वे मैट्रोज़ में तो प्रमुखतः अंग्रेजी में, जबकि रिमोट्स में स्थानीय भाषाओं में होती हैं। मैं सोचता था काश! ये बोर्ड्स अंग्रेज़ी में होते (यहाँ मुझे अंग्रेजी की कमी महसूस होती थी)।

कोई भी अक्षर हो, अंततः वह एक चित्रकारी/आरेख ही होता है। मैं कुछ न कर पाता पर दो आरेखों को मैच करने की समझ तो थी ही। बातचीत में, क्या लिखा है, पूछ लेता, फिर अगली बार उस तरह के अक्षरों की डिजाइन को मैच करके बोर्ड्स की इबारतों को थोड़ा समझने लगा, खासकर अपने रूट की बसों के नाम की लिखावट को। इससे आवागमन आसान हो गया।

साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते मैंने हिंदीतर साहित्य में तेलुगू, तमिल, कन्नड़ आदि कई भाषाओं के अनूदित साहित्य पढ़ा था। सामाजिक विज्ञान में देश के विभिन्न राज्यों के बारे में बहुत-सी बातें पढ़ाई जाती हैं, जिन पर हम उस समय ध्यान नहीं देते। पर अपनी आवश्यकता के हिसाब से जो पढ़ा था, उसे दुहराता गया। अब जब भी कभी स्टाफ या स्थानीय लोगों से बातचीत होती, उनकी साहित्य संस्कृति से जुड़ी बातों को अपने यहाँ की बात से अधिक महत्त्व देता। इससे सामने वाला थोड़ा हमसे जुड़-सा जाता। संवाद के दौरान मैं कहने से अधिक सुनने पर जोर देता था, इससे एक तरफ नई बातों का ज्ञान होता, दूसरी ओर सामने वाले के मनोभावों की तुष्टि भी.. फिर वो अगले संवाद के लिए प्रेरित भी करता था (कई बार तो शाम की चाय इसी चर्चा के भरोसे ही होती थी)।

कक्षाओं में बच्चे या तो तेलुगू जानते या थोड़ी सी इंग्लिश.. नाममात्र को हिंदी। चूंकि वे प्राइमरी तक कुछ हिंदी पढ़े थे, कुछ सलमान, अमिताभ से भी सीखे थे.. तो अपने लिए उतना बहुत था। अब जो कुछ पढ़ाना था, उस कंटेंट से मिलती-जुलती स्थानीय बातों/चीजों को खोजता.. चीजों के अंग्रेजी शब्दार्थ देखता.. वाक्यों को हिंदी/अंग्रेजी दोनों में बोलता। व्याकरण को अंग्रेजी ग्रामर के साथ साम्यता बैठाकर समझाने की कोशिश करता। शेष चीजों को श्यामपट्ट के माध्यम से उन्हें लिखा देता और एक हद तक समझाने के बाद रटने के लिए भी कहता था। कक्षा आठवीं में एक शब्द 'रजाई' समझाने में बहुत दिक्कत आई, अंग्रेजी मीनिंग ब्लैंकेट/क्विल्ट बताने के बाद भी.. क्योंकि साउथ में तो सर्दी पड़ती नहीं, इसलिए उधर लोग रजाई का प्रयोग नहीं करते हैं। फिर उन्हें उत्तर भारत के शीतलहर की खबरों को दिखाकर उसे महसूस करने को कहा। अब उन्हें रजाई का मतलब समझ में आ गया।

एक मजेदार घटना याद आती है, एक बार एक बच्चे की माँ आ गई किसी मुद्दे को लेकर। वो पढ़ी-लिखी नहीं थीं, उन्हें अंग्रेजी, तेलुगू दोनों ही भाषाएं नहीं आती थीं। वो केवल स्थानीय बोली बोल पाती थीं.. जोकि मेरे वश की बात नहीं थी। फिर मैंने कक्षा दसवीं की एक छात्रा को बीच में खड़ा किया। अब वो महिला जो कहतीं, वह छात्रा मुझे समझाती, मैं जो उत्तर देता, वो उस महिला को समझाती। अंततः महिला संतुष्ट होकर वापस गई।

बच्चे मुझे अपनी भाषा सिखाने में बहुत रुचि लेते थे, अगर मैं एकाध लाइन बोल लेता.. तो उन्हें बहुत मज़ा आता.. कि हमने तो सर को ही पढ़ा दिया। इसमें दूसरी, तीसरी कक्षा के छोटे बच्चे सबसे आगे रहते थे। इस तरह मैंने 200 से अधिक तेलुगू शब्द व दसियों कामचलाऊ वाक्य सीखे।

सात-आठ महीनों में ही मेरा ट्रांसफर (31 मार्च 2010) गुवाहाटी हो गया। अब मेरा तेलुगू सीखना रुक गया। छोटे बच्चे भी दुखी थे कि उनका इतना अच्छा स्टूडेंट जा रहा है, जो उन्हें बिना डाँटे उन्हें सिखाता, व उनसे सीखता रहता है। मैं भी दु:खी था कि काश! थोड़ा और सीख पाता तो एक नई भाषा पर अधिकार हो जाता, एक साहित्य, संस्कृति और मेरी होती।

आज भी मैं बिहू की बात करता हूँ, शंकरदेव, चुकाफ़ा, लाचित बरफूकन.. की बात करता हूँ। मुझे कभी न अनंतपुर में कोई दिक्कत हुई.. न गुवाहाटी में, न ही नगांव में। प्रयास है कि आगे भी किसी जगह पर कोई दिक्कत न आए.. जब तक जहाँ रहें, वहाँ के बनकर रहें।

भाषा कभी किसी के रास्ते का रोड़ा नहीं है, रोड़ा हमारी सोच में है.. हम अपने दायरे से निकलना नहीं चाहते हैं। खासकर एक भाषा के लोगों को दूसरे भाषायी क्षेत्रों में पोस्टिंग देकर इस भाषायी दायरे को तोड़ने और वातावरण में बदलाव का काम आसानी से संभव है। जो अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में नियुक्त हुए हैं.. वे अपनी सोच का दायरा बढ़ाएँ.. इसे एक अवसर मानें.. जहाँ हैं.. वहाँ की भाषा-संस्कृति में रुचि दिखाएँ। यह न केवल उनके लिए सही होगा.. बल्कि भाषिक, सामाजिक, क्षेत्रीय जड़ता को तोड़ने की दिशा में एक कदम होगा और सही मायने में हिंदी की गरिमा को भी बढ़ाएगा।

श्री इंद्रमणि उपाध्याय
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, के.रि.पु.ब. (प्रथम पाली), लखनऊ

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# रे मन अपनी भाषा बोल (गीत)

रे मन अपनी भाषा बोल, रे मन अपनी  भाषा बोल।
भाव-विचार की संपदा ही, देती मिश्री घोल॥

हिंदी जन गण मन की भाषा, हम सब की अभिलाषा।
मीरा और सूर की भाषा, क्रांति की परिभाषा।
मिलकर सब सम्मान करें हम, बोलें सब दिल खोल।
रे मन अपनी भाषा बोल, रे मन अपनी भाषा बोल॥

राष्ट्र एक सूत्र में बँधकर, सबको गले लगाए।
संरक्षण देकर तन-मन से, रोम-रोम हर्षाए।
हिन्दुस्तां पे नाज़ है हमको, इसका न कोई मोल।
रे मन अपनी भाषा बोल, रे मन अपनी भाषा बोल॥

चंदा मामा कहीं खो गए, याद रहा अब मून।
छूटी कहानी दादीजी की, हो गया जीवन सून।
दिल की बगिया सूनी हो गई, भूल गए सब ठिठोल।
रे मन अपनी भाषा बोल, रे मन अपनी भाषा बोल॥

साहित्य के असीम सागर से, बुझती ज्ञान पिपासा।
निज भाषा ही गाँठें खोले, शांत करे जिज्ञासा।
समृद्धि को समझें इसकी, भटक गए दिल टटोल।
रे मन अपनी भाषा बोल, रे मन अपनी भाषा बोल॥

राजभाषा हिंदी का प्रतिदिन, करना है उत्थान।
लिखने बोलने और पढ़ने पे, सभी करें स्वाभिमान।
मात्र दिवस या मास मनाकर, मत कर टाल मटोल।
रे मन अपनी भाषा बोल, रे मन अपनी भाषा बोल॥

भारत माँ की गौरव हिंदी, संविधान अभिमान।
अपनी भाषा से ही बढ़ता, मान और सम्मान।
इसके प्रचार में आगे आएं, न छोड़ें कोई झोल।
रे मन अपनी भाषा बोल, रे मन अपनी भाषा बोल॥

डॉ. मिथिलेश राकेश
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, क्र.1 जे.आर.सी. बरेली कैंट

# हिंदी

हिंदी वह शक्ति है जिसके बल पर,
मिली थी आजादी।
हिंदी वह शान है जिसके बल पर
हम जीते हैं शान से।
हिंदी वह भाषा है, जिसमें मानव के भाव भरे हैं,
भावनाओं को सहेजने की शक्ति है हिंदी।
हिंदी हमारी आत्मा है,
भावना का साज है।
हिंदी वह शक्ति है,
जिसके बल पर मिली थी आजादी।
शिक्षा की शुरुआत भी अ, आ, इ, ई से होती है,
नवजात की किलकारी भी हिंदी से ही होती है।
शिशु भी तुतला कर मां, पा, शब्द ही कहता है,
जीवन-बेला की शुरुआत भी हिंदी से ही होती है।
सुख-दुख के भाव भी हिंदी में ही रचते हैं,
पल-पल के घाव भी हिंदी से ही भरते हैं,
यही तो वह भाषा है,
जो दूरियां मिटाती है,
अपनों को अपनों से मिलाती है।
हिंदी वह शान है,
जिसके बल पर हम जीते हैं शान से।
हिंदी प्रेम का वह अटूट धागा है,
जो विभिन्न भाषाओं को एक डोर में बांधती है।
दिलों को जोड़ने की एक मधुर भाषा है,
यही वह शक्ति है जो दुनिया को एक डोर से जोड़ती है।
यही वह शक्ति है जिसके बल पर हम जीते हैं शान से।
हिंदी ही वह शक्ति है,
जिस आजादी को हम जीते हैं शान से।।

श्रीमती अनीता सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (अर्थशास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# हिंदी का महत्व

हमारी मातृभाषा है हिंदी
हमारी परिभाषा है हिंदी
छोटी सी उम्र में सीखी है
मरते दम तक कायम रहेगी ये हिंदी
जन-जन की भाषा है हिंदी।
मेरी, तुम्हारी, हमारी
हम सब की प्यारी भाषा है हिंदी
हमारी मातृभाषा है हिंदी
सबसे न्यारी सबसे प्यारी
सबसे सहज, सबसे सरल
हमारी भाषा है हिंदी
हमारी मातृभाषा है हिंदी।
अभिनंदन है अपनी संस्कृति का
आराधना है अपनी भाषा की
हमारी मातृभाषा है हिंदी।
यूं तो और भी हैं भाषाएं
लेकिन अपनापन दर्शाती है हिंदी
हमारी मातृभाषा है हिंदी।
आइए हम सब मिलकर हिंदी भाषा को ऊँचा दर्जा दिलवाएं
मेरी, तुम्हारी, हमारी
हम सब की प्यारी भाषा है हिंदी
हमारी मातृभाषा है हिंदी।
हिंद-हिंद से हिंदुस्तान है
हिंदी ही हमारी शान है
जय हिंद, जय हिंदी।

श्रीमती रूबी मिश्रा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)(संविदा)
केन्द्रीय विद्यालय, सीतापुर (प्रथम पाली)

# हिंदी भाषा- हमारा अभिमान

है जिस पे नाज़ सभी को, ज़ुबान है हिंदी,
हमारे देश की अज़मत है, शान है हिंदी।

सभी के वास्ते दिल में है प्यार बस इसके,
सभी को प्यार है, सब की ही जान है हिंदी।

संजोकर रक्खा है सारे जहान को ख़ुद में,
हाँ! पूरे विश्व में सबसे महान है हिंदी।

दिलों पे राज किया है सदा यूँ ही इसने,
दिलों की जान है और आन-बान है हिंदी।

कबीर तुलसी ने, मीरा ने इसमें लिक्खा है,
इसीलिए तो सदा से महान है हिंदी।

हर हिंद वासी के होंठों की ये सजावट है,
कि हिंद देश में अमनो-अमान है हिंदी।

हर एक वर्ग को धागे में ही पिरोया है,
कि हर किसी के लिए इक समान है हिंदी।

हमारे देश का अस्तित्व, है विरासत है,
मैं सच कहूँ तो, हाँ! हिन्दोस्तान है हिंदी।

श्री काशिफ अहसन
स्नातकोत्तर शिक्षक (अर्थशास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय, एन.टी.पी.सी., दिबियापुर

# जल : प्रकृति की अनमोल धरोहर

गर्मी की छुट्टियाँ प्रारंभ हुई, सोचा क्यों न सुबह की सैर "गोमती रिवर फ्रन्ट" के किनारे की जाए। सुबह उठ हम चले सैर को, सोचा था गोमती नदी का किनारा और वहाँ बने पार्क की तरो ताज़ा हवा, वाह! खूब आनंद आएगा। परंतु हम जब पहुंचे तथा खाटू श्याम जी के मंदिर के पास से उतरे और गोमती नदी को प्रणाम करने ज्यों ही पास बने रेलिंग पर पहुंचे, अत्यंत ही दयनीय स्थिति में दिखी गोमती नदी। नदी से आती दुर्गंध तथा आते-जाते लोगों का नदी में पूजा या हवन की बची हुई सामग्री फेंकना, ऐसा लग रहा था मानो हम अपनी ही माता का अपमान कर रहे हों।

नदियों का कलकल निनाद कब अवसाद में बदल जाएगा, कोई नहीं जानता, जलाशयों का जीवन कब ठहर जाएगा, कह पाना मुश्किल है। पानी न मिलेगा, तो परिंदों की उड़ान पर भी सवालिया निशान लग जाएगा। वैसे भी उड़ान के लिए पानी की ज़रूरत को हम भुला बैठे हैं।

हम जल का दोहन करना तो जानते हैं, किंतु उसके संरक्षण में हम रुचि नहीं दिखाते हैं। हम यह भी जानते हैं कि कुछ दिनों तक भूखे तो रहा जा सकता है, पर पानी पिए बगैर कुछ घंटे जीना मुमकिन नहीं। यह अफसोस की बात है कि हम जल का दुरुपयोग एवं उसकी उपेक्षा करने के आदी हो गए हैं।

जल संकट को दूर करने के क्या उपाय हैं? आइए संभावनाएं तलाशते हैं– अत्यधिक जल दोहन रोकने के लिए कड़े कानून बनाए जाएं, जिसमें सज़ा का प्रावधान हो। तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण करते हुए तथा परस्पर विवादों को समाप्त करते हुए जल की समस्या का शीघ्र निदान किया जाए। ऐसी विधियों की खोज की जाए, जिनसे समुद्री जल का शोधन कर उसका उपयोग कृषि कार्यों में किया जा सके। साथ ही भूगर्भीय जल भंडार की पुनः देख-रेख करने के अलावा छत से बरसाती पानी को सीधे किसी टैंक में भी जमा किया जा सकता है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के निवासी अपने मकानों की छत से गिरने वाले वर्षा के पानी को भूमि में समाहित कर भूजल का स्तर बढ़ा सकते हैं। शहरों में प्रत्येक आवास के लिए रिचार्ज कूपों का निर्माण अवश्य किया जाना चाहिए, जिससे वर्षा का पानी नालों में न बहकर भूमिगत हो जाए।

तालाबों, पोखरों के किनारे वृक्ष लगाने की पुरानी परंपरा को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। ऊंचे स्थानों, बांधों इत्यादि के पास गहरे गड्ढे खोदे जाने चाहिए, जिससे उनमें वर्षाजल एकत्रित हो जाए और परिणामस्वरूप बहकर जाने वाली मिट्टी को अन्यत्र जाने से रोका जा सके।

यदि हमें मानव सभ्यता को जल प्रदूषण के खतरों से बचाना है, तो इस प्राकृतिक संसाधन को प्रदूषित होने से रोकना नितांत आवश्यक है, अन्यथा जल प्रदूषण मानव सभ्यता के लिए खतरा बन जाएंगे। इसलिए "बिन पानी सब सून" की सीख को अब जीवन में उतारने की आवश्यकता है।

श्रीमती श्वेता किरण
स्नातकोत्तर शिक्षक (जीव विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय, बाराबंकी

# जीवन इतना सरल न होता

जीवन इतना सरल न होता,

यदि ज्ञान का भाव भरा न होता।

परिश्रम के पथ को यदि चुना न होता,

पथ के कांटे यदि हटाए न होते,

तो जीवन इतना सरल न होता।

बचपन में घुटनों के बल चला न होता,

उंगली पकड़कर यदि गया न होता,

तो जीवन इतना सरल न होता।

माता-पिता एवं गुरुओं को प्रणाम न करता,

और मित्रों के संग सहपाठ न किया होता,

तो जीवन इतना सरल न होता।

भाषा का पाठ यदि याद न होता,

विज्ञान का ज्ञान और गणित के सूत्र यदि प्रयोग न होते,

तो जीवन इतना सरल न होता।

कार्य पथ के संघर्षों में यदि चला न होता,

मातृभूमि की सेवा को यदि गया न होता,

तो जीवन इतना सरल न होता।

श्री आदर्श शर्मा

स्नातकोत्तर शिक्षक (जीव विज्ञान)

केन्द्रीय विद्यालय, आई.वी.आर.आई., बरेली

# चरित्र निर्माण

सिंचित कर निज ज्ञान नीर से,
नव सुमनों में नव प्राण भरें।
देश के भावी कर्णधारों का,
आओ चरित्र निर्माण करें॥
हैं पौध हमारी क्यारी के,
बागों के वृक्ष बनाना है।
निज ज्ञान और अनुभव से,
उत्साह सभी में लाना है॥
निराशा तज आशा से,
नव शक्ति का संचार करें॥
देश के भावी कर्णधारों का,
आओ चरित्र निर्माण करें॥
सबमें अच्छे गुण होते,
पर कोई जगाने वाला हो।
अच्छाई सबमें छिपी हुई,
पर कोई बताने वाला हो॥
पथ प्रगति पा जाएगा,
उसका यदि हम ध्यान धरें॥

देश के भावी कर्णधारों का,
आओ चरित्र निर्माण करें॥
देश की रक्षा कोई करेगा,
तो कोई करेगा अविष्कार।
शिक्षा की ज्योति जलाए कोई,
कोई बने जीवन आधार।
कर्तव्य कर्म को जाने वो,
देश के हित सम्मान भरें॥
देश के भावी कर्णधारों का,
आओ चरित्र निर्माण करें॥
शिक्षक राष्ट्र निर्माता है,
और समाज का दर्पण भी।
वह बच्चों का भाग्यविधाता,
सेवा है और अर्पण भी॥
थोड़ा सा यदि मिले कहीं,
उन गुणों का हम गुणगान करें॥
देश के भावी कर्णधारों का,
आओ चरित्र निर्माण करें॥

श्रीमती आकांक्षा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, आई.वी.आर.आई., बरेली

# भावों की अनंत यात्रा

हृदय में एक भाव उपजा
मस्तिष्क ने शब्दों से श्रृंगार किया
उंगलियों ने कलम को थामा
कलम ने स्याही का आलिंगन कर
कागज़ पर
लिपि के सहारे
भावों को प्रवाह दिया
और
भावों का यह सफ़र निकल पड़ा
एक अनंत यात्रा पर
जिसने जाने कितने हृदयों को
द्रवित किया
कोमल मन को सहलाया
एक नवीन भाव को
किसी और हृदय में उपजाया
और
यह प्रक्रिया
फिर दोहराई जाती रही
क्या आदि
क्या अंत
कविता ही नहीं
हम सब भी
या कहें
हर वस्तु
मानो
एक अनंत यात्रा में है
अनंत की ओर
एक अनवरत यात्रा।

श्री नितिन कुमार मिश्र
स्नातकोत्तर शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, ए.एम.सी. (प्रथम पाली), लखनऊ

# प्रकृति का भय

मैंने झटका भूकंप का आज,
पहली बार महसूस किया है।
चपला-सी धड़कन का,
दिल में एहसास किया है।
प्राकृतिक कोप को दिल से,
महसूस आज किया है।
भुज और चिली के भय का,
एहसास आज किया है।
बाढ़, भूकंप, सुनामी जैसी लीला,
जब-जब प्रकृति दिखाती है।
मानव की समस्त सुरक्षा,
बस धरी रह जाती है।
चाहे जितना जोर लगा लो,
प्रकृति बड़ी बलशाली है।
बिना प्रकृति की कृपा के धरती,
गेंद बड़ी-सी खाली है।
मैंने झटका भूकंप का आज,
पहली बार महसूस किया है।
चपला-सी धड़कन का,
दिल में एहसास किया है।

जितना चाहो मौज मना लो,
जितना चाहो जी लो आज।
सुनामी, बाढ़, भूकंप हैं,
बस प्रलय का आगाज़।
यदि बचना है तांडव से इसके,
तो धरा को हरा बनाना होगा।
ये होना अपनी कोशिश से है,
तभी विनाश से बच पाएगा।
अगर अभी भी नहीं किया,
प्रयास धरा को बचाने का।
रहो तैयार हे मानव फिर,
मृत्यु मार्ग अपनाने का।
मैंने झटका भूकंप का आज,
पहली बार महसूस किया है।
चपला-सी धड़कन का,
दिल में एहसास किया है।

श्री संजीव भदौरिया
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय, बाराबंकी

# मां: एक योद्धा

तुमसे ही शुरू होती है दुनिया मेरी,
शुरू होती है, खुशियां भी।
जन्नत भी तू, मन्नत भी तू,
पहचान मेरी ज़िंदगी की भी।
मेरा है क्या जो दे सकूँ उसके बदले,
जो है,ज़िंदगी की दी हुई हर एक सांस भी तू।
तेरा आँचल, जिसमें सिमटी है दुनिया मेरी,
तेरा दुलार, जिसमें रहती हैं खुशियां मेरी।
खुद न खाकर मुझे खिलाया,
गोद में लेकर थपकी से सुलाया।
पानी की जगह आंसू पिया,
फिर भी लाडले को बेइंतहां प्यार दिया।
दुनिया की चकाचौंध में, खो गया मैं,
उस मां को भूलकर कितना बड़ा हो गया मैं।
सहकर हजारों ग़म, जिसने मुझे जीना सिखाया,
पर क्या हमने अपना कर्तव्य निभाया?

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

-

श्री राकेश मिश्र
स्नातकोत्तर शिक्षक (अर्थशास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय, के.रि.पु.ब.,(प्रथम पाली), लखनऊ

# रक्त दान

खून का रिश्ता सबसे मज़बूत है अगर, तो चलो खून का रिश्ता बनाते हैं;

अपने रक्त की कुछ बूँदें दान कर एक जीवन बचाते हैं॥

जब तुम्हारे रक्त ने एक नन्हीं-सी जान में प्राण फूँके होंगे,

तो सोचो तुमने उसकी माँ के कितने आँसू पोंछे होंगे॥

कितने आशीर्वाद तुम्हारी झोली में गिरे होंगे,

न जाने कितने अभिवादन नतमस्तक राहों में खड़े होंगे॥

सच है कि रक्तदान महादान ही तो है,

ईश्वर के बंदों को बचाने में हमारा योगदान ही तो है,

दुआएं गर दूसरी दुनिया तक साथ जाती हैं, तो फिर उन्हें ही कमाते हैं,

खून का रिश्ता सबसे मज़बूत है अगर, तो चलो खून का रिश्ता बनाते हैं।

अपने रक्त की कुछ बूँदें दान कर एक जीवन बचाते हैं॥

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्रीमती रूचि गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षक (रसायन शास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल, बरेली

# हिंदी साहित्य का नायाब हीरा- मुंशी प्रेमचंद

प्रीति बाला आपको लाइब्रेरियन मैडम बुला रहीं हैं, क्लास रूम में दाख़िल होते हुए मेरी सहेली ने आवाज़ लगाई। यह सुनते ही मेरे मन में यह विचार कौंधा कि कहीं मैंने कोई गलत किताब तो नहीं इश्यू करवा ली। ख़ैर मैं उन विचारों के साथ लाइब्रेरी में पहुँची। मैडम ने मुझे बैठने का इशारा किया। मैं पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठ तो गई पर अजीब घबराहट महसूस कर रही थी। मैडम टेबल पर फैली किताबें बटोर रही थीं और मैं उनके चेहरे पर आते जाते हुए भावों को पढ़ने का प्रयास कर रही थी। थोड़े ही इंतज़ार के बाद मैडम ने एक अलमारी खोली और एक मोटी सी किताब हाथ में लेकर मेरे पास आई और कहा कि यह लेखक मुंशी प्रेमचंद का कहानी संग्रह 'मानसरोवर' है। आपको इस पुस्तक को पढ़ कर इसकी समीक्षा करनी है। मुझे काटो तो खून नहीं क्योंकि मेरा हिंदी साहित्य से दूर-दूर का कोई नाता नहीं था। क्लास के 45 बच्चों में अकेली आप ही हिंदी भाषी हैं, इसलिए यह काम आपको सौंप रही हूँ, ऐसा मैडम ने कहा। मैं उनके इस आदेश को ठुकरा नहीं पाई और किताब लेकर क्लास की तरफ चल दी। क्लास में उस मोटी किताब को हाथ में लिए मुझे देख हर बच्चा हैरान था क्योंकि मैं तो पतली सी टिनटिन कॉमिक पढ़ने से भी कतराती थी।

सेकंड सैटरडे और संडे की छुट्टी होने के कारण मैंने उस किताब को पढ़ना शुरू किया। एक कहानी ख़त्म होती, दूसरी शुरू हो जाती और फिर तीसरी, यह सिलसिला चलता रहा। न जाने कब शाम हो गई। हर कहानी मेरे मन मस्तिष्क में चल चित्र बन कर अंकित हो रही थी। मुंशी प्रेमचंद का दीन-हीन किसानों, ग्रामीणों और शोषितों की अवस्था का मार्मिक चित्रण मेरे मन को व्यथित कर रहा था। सारी घटनाएं ऐसी लग रही थीं, मानो लेखक आँखों देखा हाल सुना रहा हो। इस तरह मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानियां और उपन्यास पढ़ने की मेरी यात्रा आरम्भ हुई। उनके बारे में जो मैंने जाना और समझा वह आप लोगों से साझा कर रही हूँ।

मुंशी प्रेमचंद शुरू में नवाब राय के नाम से उर्दू में लिखते थे। उनका पहला कहानी-संग्रह सोज़े-वतन देशभक्ति के प्रबल स्वर के कारण अंग्रेज़ सरकार ने जब्त कर लिया था। उनके साहित्य का सबसे प्रमुख विषय था राष्ट्रीय जागरण और समाज-सुधार। उनकी रचनाएं कफ़न, पूस की रात, गोदान आदि शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाती हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त अन्य बुराइयों- नशाखोरी, शोषण, बहु-विवाह, दहेज, अनमेल विवाह, छुआछूत, ऊँच-नीच आदि पर भी प्रभावशाली साहित्य लिखा।

मुंशी प्रेमचंद ने 300 से अधिक कहानियाँ और 11 उपन्यास लिखे। उनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से आठ भागों में संकलित हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं-सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि , निर्मला, गबन, कर्मभूमि और गोदान। कर्बला और प्रेम की वेदी नामक उनके दो नाटक भी हैं। उनके द्वारा लिखित निबंध कुछ विचार और विविध प्रसंग नामक संकलनों में संकलित हैं।

मुंशी प्रेमचंद अपनी सरल, मुहावरेदार भाषा के लिए विख्यात हैं। उन्होंने लोकभाषा को साहित्यिक भाषा बनाया। उनकी भाषा आम जनता के बहुत निकट है। वे अपने पात्र, वातावरण और मनोदशा के अनुसार शब्दों का चुनाव कर उसका वर्णन करते हैं। उनके द्वारा लिखा एक-एक शब्द दिलों पर दस्तक देता है और रोम-रोम में रोमांच भर देता है। इसलिए मैं उनको हिंदी साहित्य का एक नायाब हीरा मानती हूँ।

श्रीमती प्रीति बाला
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कार्यानुभव)
केन्द्रीय विद्यालय, गोमतीनगर (द्वितीय पाली), लखनऊ

# हिंदी भाषा के संवर्धन में विद्यालयी पुस्तकालयों का योगदान

वर्तमान समय में देश के लगभग सभी निकायों में हिंदी भाषा के संवर्धन के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में समन्वयन तथा सूचना तकनीक में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य बहुत तेजी से हो रहा है। हिंदी के विभिन्न आयामों पर शोध कर शोधार्थी हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं। देश एवं विदेश के शैक्षणिक संस्थानों के पुस्तकालयों में हिंदी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहन मिल रहा है।

मनुष्य ज्ञान का प्यासा होता है। वह हमेशा कुछ न कुछ सीखने की, जानने की इच्छा रखता है। वह पुस्तकों से अपना ज्ञान बढ़ाता है। पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र हैं। वे दु:ख-सुख में हमारी साथी हैं। श्री बाल गंगाधर तिलकजी ने कहा था- 'मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा'। पुस्तकालय पाठकों के अध्ययन का मुख्य केंद्र होता है। इन पुस्तकालयों में विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकें, विभिन्न भाषाओं के साहित्य, समाचार पत्र और पत्रिकाएं विद्यार्थियों को एक स्थान पर ही उपलब्ध होती हैं। पुस्तकालय में अध्ययन के अनुकूल माहौल भी होता है। पुस्तकालय का पाठकों के जीवन में एक विशेष महत्व होता है।

राजभाषा अधिनियम/नियम के अनुसार पुस्तकों की खरीद हेतु कुल बजट के 50 प्रतिशत से अधिक की धनराशि से हिंदी भाषा की पुस्तकें क्रय किया जाना अनिवार्य है, और केंद्र सरकार के सभी संस्थान के पुस्तकालय इस अधिनियम का पालन कर रहे हैं। विद्यालयी पुस्तकालयों के द्वारा हिंदी भाषा के संवर्धन हेतु विभिन्न क्रिया-कलाप संचालित किए जा सकते हैं, जैसे-

1. हिंदी साहित्यकार महोत्सव
2. हिंदी भाषा एवं अन्य भारतीय भाषाओं का भाषा-संगम
3. हिंदी भाषा साहित्य की पुस्तक प्रदर्शनी
4. हिंदी भाषा साहित्य की पुस्तक समीक्षा लेखन प्रतियोगिता
5. हिंदी भाषा हस्त कला-लेखन प्रतियोगिता
6. हिंदी वेब-ब्लॉग लेखन प्रतियोगिता
7. हिंदी भाषा के साहित्य एवं साहित्यकारों पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
8. हिंदी भाषा के साहित्य पर नारा-लेखन प्रतियोगिता
9. बाल कवि सम्मेलन
10. अभिनय प्रतियोगिता

हिंदी भाषा एवं साहित्य के संवर्धन हेतु विद्यालयी पुस्तकालय अपने पाठकों को हिंदी भाषा एवं साहित्य के विषय में नयी सूचना इकाईयों से सूचना प्राप्त कर चयनित प्रसार प्रलेखन सेवा, अनुक्रमणिका जैसे पोप्सी, प्रेसीज एवं चेन इंडेक्सिंग आदि का निर्माण कर प्रलेखन सेवा प्रदान कर सकते हैं।

पाठकों के लिए काव्य व कहानियां।
अपने लिए ज्ञान यहां समाया।।
पुस्तकों का यह निराला संग्रहण।

ज्ञान करो यहां पूरा ग्रहण॥
हिंदी लेखकों की पुस्तकें यहां होतीं।
कोई नया ज्ञान है बतलाती॥
तो कोई मनोरंजन भी करती।
किताबों की दुनिया यह कहलाती॥
लेखकों के स्वप्न है यहां।
कवियों के काव्य है यहां॥
कुछ हंसाती तो कुछ रूलाती।
तो कुछ ताजी किताबे है यह यहां॥
आओ प्रिय पाठकों पुस्तकालय आओ। ज्ञान यहां सारा पाओ॥
कोई रोक-टोक नहीं यहां। जब चाहो पढ़ो यहां॥
विद्यालय में इससे अच्छी जगह नहीं। ज्ञान की जहां कोई कमी नहीं॥
यह है पुस्तकों का आलय जिसको हम सब कहते हैं प्यारा पुस्तकालय॥

श्री राकेश कुमार गुप्ता,
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल बी..के.टी., लखनऊ

# हिंदी को वास्तविक सम्मान दिलाते केन्द्रीय विद्यालय

हिंदी शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के सिंधु शब्द से हुई है। सिंधु नदी के क्षेत्र में आने कारण ईरानी सिंधु न कहकर हिंदु कहने लगे। हिंदी भारत की संवैधानिक राजभाषा है, जिसे 14 सितंबर 1949 को अधिकारिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया। भारत में अनेक बोलियां और भाषाएं बोली जाती हैं। हमारे देश में इतनी भाषाएं है कि ये कहावत कही गई है "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी" अर्थात हमारे देश भारत में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और हर चार कोस पर बोली बदल जाती है। भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। हिंदी को प्रभावी बनाने में केन्द्रीय विद्यालय अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। 15 दिसंबर 1963 से लेकर आज तक हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थी व शिक्षक कर रहे हैं। उत्तर-पूर्व हो या फिर लेह-लद्दाख, कारगिल हो या फिर कन्याकुमारी, आपको हिंदी भाषा में बोलते व पढ़ते–पढ़ाते शिक्षक व विद्यार्थी मिल जाएंगे। इन जगहों में वे माता-पिता और परिवारीजन भी शामिल हैं, जिन्हें हिंदी बोलनी नहीं आती है। ये ज्यादातर आदिवासी समुदाय हैं, पर केन्द्रीय विद्यालय में बच्चों के पढ़ने के कारण धीरे-धीरे वे भी हिंदी बोलने व समझने लगे हैं। केन्द्रीय विद्यालयों के बच्चे, अध्यापक व अभिभावक के मध्य सेतु का कार्य करते हैं। आपको बहुत आश्चर्य होगा जब आप अरुणाचल के तवांग, नागालैंड के कोहिमा या असम के कार्बिआंगलांग क्षेत्रों में बच्चों को धाराप्रवाह हिंदी बोलते सुनेगे, इसमें बहुत बड़ा योगदान केन्द्रीय विद्यालयों का भी है। यही नहीं, विदेशों में भी केन्द्रीय विद्यालय अपनी सशक्त भूमिका निभा रहे हैं- नेपाल, मास्को व तेहरान में भी हिंदी का परचम लहरा रहे हैं। सच ही है केन्द्रीय विद्यालय वास्तव में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। द्विभाषी होने के कारण केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का ज्ञान होता है अत: उनके अहिंदी भाषा भाषी माता-पिता व भाई-बहनों को भी हिंदी बोलना आ जाता है। विद्यार्थी पाठ्य-सहगामी क्रिया-कलापों को भी हिंदी, अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं में प्रस्तुत करते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि केन्द्रीय विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी हिंदी के प्रचार-प्रसार व सम्मान में अपना पूर्ण योगदान दे रहा है। हिंदी हमारे देश भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, फिजी, मॉरिशस, गुयाना, सूरीनाम और नेपाल में बोली जाती है। हिंदी भाषा बोलने वालों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, जो हिंदी बोलने वालों के लिए एक अच्छी खबर है। इसीलिए मेरा तो यही कहना है कि:

देश हो, या विदेश हो, दूर देश में भी बैठकर मातृ, मातृभाषा और मातृभूमि के गुण गाइए।

श्रीमती पूर्णिमा त्रिपाठी
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय, कानपुर कैंट (द्वितीय पाली)

# आचार्य वचनेश

महादेवी वर्मा के पूर्ववर्ती साहित्य मनीषियों में आचार्य वचनेश जी का नाम सर्वोपरि है। आचार्य वचनेश जी का जन्म फर्रुखाबाद नगर के मित्तुकूंचा मोहल्ले में 1875 में हुआ था। इनके पिता पंडित पुत्तू लाल मिश्र सात्विक प्रकृति के व्यक्ति थे। बाल्यकाल में ही वचनेश जी का अनायास संपर्क स्वामी दयानंद सरस्वती से हुआ; जिससे उनकी पूरी जीवन धारा ही बदल गई। स्वामी जी की प्रेरणा से ही वचनेश जी ने फारसी छोड़कर संस्कृत और हिंदी पढ़ना शुरू किया और इसी प्रक्रिया में उन्होंने अपने अध्यवसाय एवं गहन अध्ययन से पूरे काव्यशास्त्र का मंथन कर आचार्यत्व प्राप्त किया।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात की कहावत को चरितार्थ करते हुए इन्होंने 8 वर्ष की बाल्यावस्था से काव्य रचना प्रारंभ कर दी। 10 वर्ष की अवस्था से खतराने मोहल्ले के भैरवनाथ मंदिर में नियमित रूप से होने वाली कवि गोष्ठियों में सम्मिलित होने लगे। यौवन की दहलीज पर पहुंचते हुए उन्होंने श्रृंगार परक रचनाओं एवं सवैयों की रचना आरंभ की, जो उनके जीवन के उत्कर्ष के साथ ही साहित्य की ऊंचाइयों में परिणत होने लगी। वर्ष 1897 में उन्होंने भारत-हितैषी नामक पत्रिका का संपादन प्रारंभ किया। इसी दौरान कालाकांकर के राजा राम पाल सिंह तथा पंडित मदन मोहन मालवीय से उनकी मुलाकात हुई। वचनेश के भाषा-ज्ञान तथा उनकी अप्रतिम छंद-योजना से राजा साहब इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने वचनेश जी को अपना साहित्यिक गुरु बना लिया।

वचनेश जी ने एक सृजनशील साहित्यकार की भांति काव्य, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि साहित्य की सभी विधाओं में 47 पुस्तकों की रचना की। उनकी यह विपुल साहित्यराशि पुस्तकों के रूप में अथवा हिंदी के प्रमुख राष्ट्रवादी पत्र हिंदुस्तान में क्रमिक रूप से प्रकाशित होती रही, फिर भी उनकी काव्य-साधना का बहुत बड़ा अंश आज भी अप्रकाशित पड़ा हुआ है।

इनकी कृतियों में आनंद लहरी, नीति कुंडल, नवरत्न, बंदाबाई, भारती-भूषण, लाल कुमारी, वैराग्य शतक, ध्रुव-चरित्र, खून की होली अनेक विविध साहित्यिक विधाएं प्रमुख हैं। इन्हें सर्वाधिक प्रसिद्धि शबरी काव्य से ही मिली।

इस काव्य में रामायण महाकाव्य की पात्र शबरी की भक्ति-भावना का चित्रण है। कवि ने गांधी जी के 'हरिजन' विमर्श से प्रेरित होकर शबरी को अपने काव्य का विषय बनाया। शबरी में स्वाभाविक ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है। शबरी की अप्रतिम भक्ति-भावना में माधुर्य को भी समाहित किया गया है। यह रचना वास्तव में साहित्य में उत्कृष्ट स्थान रखती है। उनके विनय छंद को ही देखिए-

"आवौ सनेही सदा के सखा,
फिरते सोई तापस बेस बनावौ।
संग लै मोहि चलौ अपनी,
अनुरागिन वा शबरी सो मिलावौ।
जानिवो चाहों, सो पाहुनी कैसी,
लुभावनी, जामैं ना जूठ बचावौ।
मोसि गये जिन बेरन पै,
उनको रस मोहु को नेक चखावौ।।"

श्रीमती आभा मिश्रा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, आर.आर.सी., फतेहगढ़

# आओ बढ़ चलें... हिंदी की ओर

यूं तो मैं कोई रचनाकार नहीं, किंतु इस पत्रिका के माध्यम से कुछ शब्द कहने का प्रयास कर रही हूं। वैसे तो प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़ा मनाना, हस्ताक्षर, पत्राचार एवं अन्य शैक्षिक कार्य हिंदी में कार्यान्वित करके हम अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं, किंतु "भारती- हिंदी विशेषांक" पत्रिका ने मेरे अंतर्मन में एक लहर को जन्म दिया।

प्रश्न.. क्या वास्तव में हिंदी के प्रति हमारा समर्पण इतना ही है? पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई जी के संयुक्त राष्ट्र में अभूतपूर्व हिंदी वक्तव्य एवं हाल ही में बुकर पुरस्कार से अलंकृत लेखिका गीतांजलि श्री की उपलब्धि से हम गौरव का अनुभव अवश्य करते हैं किंतु अपने व्यावहारिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग से अभी भी गुरेज़ करते हैं। वर्तमान समय में हिंदी भाषा में "अभिनव प्रयोग" हो रहे हैं। वैवाहिक आमंत्रण पत्र, ईमेल एवं फोन पर हिंदी के संदेश तो कम से कम ऐसा ही प्रदर्शित कर रहे हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के विषय में बात करने का उद्देश्य यह कतई नहीं है कि हम अंग्रेज़ी अथवा किसी दूसरी भाषा का तिरस्कार करें, वरन् जिस सहजता से हम अंग्रेज़ी एवं दूसरी भाषाओं को अपना रहे हैं, उसी सहजता से अपनी हिंदी भाषा को अपनाएं।

मैंने अपनी शिक्षा अंग्रेज़ी माध्यम से पूर्ण की है, किंतु मैंने वर्षों के शिक्षण-कार्य में अनुभव किया है कि बच्चे हिंदी भाषा में अधिक सहजता रखते हैं। कई कक्षाओं में हिंदी की पुस्तकें रुचिवश टटोलने पर मैंने पाया कि कितनी सरलता एवं रोचकता से हिंदी कविताओं एवं कहानियों में न केवल विज्ञान बल्कि इतिहास, भूगोल की विषय-वस्तु भी समाहित है, जो कि बच्चों के लिए सीखने-समझने में भी सरल है। हिंदी भाषा में रचे-बसे भाव, रस, छंद, अलंकार आदि रोमांचित करते हैं एवं सुखद अनुभूति देते हैं। वास्तव में हिंदी भाषा का सौंदर्य रेत पर वर्षा की बूंदों की भांति चित्त को प्रसन्नता देता है। हमारा कर्तव्य है कि हम हिंदी भाषा की सुंदरता को जीवंत रखते हुए इसे अगली पीढ़ी को सौंपें।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्रीमती संगीता अग्रवाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (विज्ञान) ,
केन्द्रीय विद्यालय, आर.आर.सी., फतेहगढ़

# हिंदी- राष्ट्र का गौरव

हिंदी हमारी राजभाषा है। देश के अधिकांश राज्यों में हिंदी बोली और समझी जाती है। हिंदी भाषा-भाषी लोग देश के कोने-कोने में व्यवसाय एवं रोजगार के सिलसिले में फैले हुए हैं, ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि हिंदी एक राष्ट्रव्यापी भाषा है। यदि हम विस्तारित रूप में देखें, तो विभिन्न भारतीय वैज्ञानिक, व्यवसायी एवं कार्मिक जो विदेशों में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं, वे भी हिंदी का मान-सम्मान विश्व स्तर पर बढ़ा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाने वाले कवि सम्मेलनों एवं मुशायरों ने भी हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिष्ठित किया है।

हिंदी उत्सवधर्मिता की भाषा है। हिंदी का क्षेत्र आज सिर्फ उत्तर भारत तक ही सीमित नहीं रहा है, अपितु संपूर्ण विश्व ने हिंदी भाषा के महत्व को समझा और अपनाया है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों पर अंकित सूचनाएं हिंदी में दी जा रही हैं, जो यह बताता है कि हिंदी इस उपभोक्तावादी युग में कितनी सशक्त भाषा है। वस्तुतः इस प्रकार की कंपनियां अपने उत्पादों को उपभोक्ता तक पहुंचा कर हिंदी को बाजार की भाषा बनाना चाहती हैं, जबकि हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हिंदी का बाजार हो। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारतीय जनप्रतिनिधियों द्वारा, हिंदी भाषा में संबोधन एवं अपने विचारों को व्यक्त करना हिंदी को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

आज के इस डिजिटल युग में हिंदी भाषा इंटरनेट पर छाई हुई है और अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं को भरपूर चुनौती दे रही है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का शिक्षण यह प्रदर्शित करता है कि हिंदी भाषा का महत्व विश्वव्यापी है। प्राविधिक ज्ञान के क्षेत्र में हमारे देश के युवा अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों में बड़े-बड़े पदों पर सुशोभित हैं और अपने साथ-साथ हिंदी भाषा को भी विदेशों में प्रतिष्ठित कर रहे हैं।

हिंदी युगबोध की भाषा है। भारत की अखंडता और एकता को बनाए रखने के लिए हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं सम्मान अत्यंत आवश्यक है। हिंदी भाषा कभी किसी आक्रान्ता की गुलाम नहीं रही, यह तो औपनिवेशिक गुलामी का असर रहा कि अंग्रेजी के प्रभाव में हिंदी को कमतर माना जाने लगा। परंतु उस समय भी हिंदी मां के बेटों के काम इतने बड़े थे कि इस गुलामी से मुक्ति की लड़ाई में हमारी हिंदी ने राष्ट्र को एकजुट बनाने मेंअपना अप्रतिम योगदान दिया। हिंदी ने संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोया। हिंदी भाषा में प्रकाशित तमाम पत्र-पत्रिकाओं एवं अखबारों ने संपूर्ण देश को एकजुट किया, जागृत किया। विभिन्न स्वतंत्रता सेनानी आपस में संदेशों के आदान-प्रदान के लिए एवं पत्र- व्यवहार के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग प्रमुख रूप से करते रहे। आजकल व्यावसायिक व्यस्तता के चलते लोगों के पास पुस्तकें पढ़ने का समय नहीं रहा ऐसा हमें दिखाई पड़ता है, परंतु यह भी देखा गया है कि यदि रचनाएं उपयुक्त और स्तरीय हों, तो पाठक उनकी ओर खिंचा चला आता है।

हिंदी के पठन-पाठन के संदर्भ में यह भी आवश्यक है कि हम पाठकों तक इस बात का उत्तर पहुंचा पाएं कि हिंदी पढ़ कर हम आखिर करेंगे क्या? हिंदी पढ़ने से हमें क्या लाभ हैं? हिंदी विषय को व्यावसायिक विकास, विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी सेवाओं के लिए एक दक्षता के रूप में रखा जाए। विद्यालयों में कम से कम कक्षा 12 तक हिंदी को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए। एक समृद्ध एवं सुसंस्कृत समाज विशेषज्ञों से नहीं बनता । वह बनता है नैतिक मूल्यों से युक्त मनुष्यों से और यह कार्य भाषा के अलावा और कोई नहीं कर सकता है। साहित्य का पठन-पाठन ही समाज में सुसंस्कार, सच्चरित्रता, आत्मसंयम, साहस, विनम्रता आदि अनेकानेक मानवीय मूल्यों के विकास में सहायक हो सकता है।

श्री विनोद कुमार मिश्र
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, लखनऊ कैंट

# कुण्डलियां

हिंदी भाषा को मिले, सदा देश का मान।
सहज सरल निर्मल बहे, अद्भुत इसकी शान।
अद्भुत इसकी शान, गीत सरस छंद माला।
अमर हुए लिख छंद, पंत रसखान निराला।
पूनम को भायी खूब, सजी ज्यों मस्तक बिंदी।
सब को आई रास प्रेम की भाषा हिंदी।।

पावन गंगा-सी लगे, हिंदी मुझको आज।
अंतर्मन को छू लिया, करें दिलों पर राज।
करें दिलों पर राज, गजब की भाषा शैली।
सुरभित होतीं देख दिशाएँ जब यह फैली।
पाती पूनम स्नेह, भिगोए जैसे सावन।
लिखकर मन की बात, लेखनी होती पावन।।

माँ जैसी ममता लगे, बहे प्रेम की धार।
तुलसी सूर कबीर का, रहा खूब अधिकार।
रहा खूब अधिकार, सभी की प्यारी बोली।
नवरस में अब खूब, मधुर रस जिह्वा घोली।
लिख-लिख गाऊँ छंद, सजाऊँ मन की झाँकी।
पूनम करती प्रेम, लगे है मूरत माँ की।।

हिंदी को हम पूजते, हिंदी है अभिमान।
हिंदी को मत भूलिए, रत्नों की यह खान।।
रत्नों की यह खान, लगे सबको अति प्यारी,
कह पूनम कविराय, जगत की राजदुलारी।।
भाषा में सिरमौर, सजे मस्तक पर बिंदी।
मिश्री का हो स्वाद, धरा पर महके हिंदी।।

श्रीमती पूनम शुक्ला
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

# हिंदी का करें सम्मान

सपने में भी नहीं सोचा था,
ऐसा दिन भी आएगा
हिन्द देश का निवासी
हिंदी बोलने में शरमायेगा।
हिंदी में ही रोते हैं हम,
हिंदी में ही हँसते हैं
सुख दुःख में नित नए-नए
हिंदी में तराने बुनते हैं।
जब भी ठोकर लगती हमको
हिंदी में ही माँ को बुलाते हैं
हिंदी में ही नित नवीन
रिश्ते हम बनाते हैं।
और अधिक क्या कहूँ भला मैं
हिंदी क्या है जीवन में
जीवन के स्वर्णिम स्वप्न हम
हिंदी में ही तो बुनते हैं
फिर भी क्यों विदेशी भाषाओं के लिए
मातृभाषा का अपमान करते हैं
माना कि आगे बढ़ने को
अंग्रेजी ज़रूरी है
पर हिंदी भी क्या कम जरुरी है?
जब तक हिंदी को देश में
सम्मान नहीं मिलेगा
तब तक हमें प्रगति का
आसमान नहीं मिलेगा
भारत माँ की मिट्टी की
आओ मिलकर शपथ उठाएं
शर्म से नहीं, गर्व से हिंदी को
अधिकाधिक प्रयोग में लायें।

श्रीमती प्रियंका गुप्ता
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, सीतापुर (प्रथम पाली)

# हिंदी

हिमगिरि के शिखर के पानी में,
गंगा-जमुना की रवानी में,
कंठ-कंठ में , प्राण-प्राण में,
है हिंदी का शाश्वत प्रभाव,
भारत की आभा और भाव॥

जीवन-दर्शन, जीवन-तर्पण,
जीवन के विह्वल भावप्रवण,
जीवन की अभिलाषा के क्षण,
को देती हिंदी सबल छांव,
भारत की आभा और भाव॥

कबीरा की वाणी से पूरित,
तुलसी के छंदों से सज्जित,
मीरा की है झंकार सकल,
रचनाकारों का वृहद गाँव,
भारत की आभा और भाव॥

हिंदी है तन, हिंदी है मन,
है प्राण हमारा और जीवन,
जनता की बोली बानी की,
एकमात्र ममतालु ठांव,
भारत की आभा और भाव॥

भारत की प्रतिनिधि है हिंदी,
भारत का कलरव है हिंदी,
भारत का भाव विवेचन और,
जीवन-दर्शन है हिंदी,
भारत के आत्मप्रकाशन की,
तिरने वाली है एक नाव,
भारत की आभा और भाव॥

श्री सिद्धार्थमणि त्रिपाठी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, आर.डी.एस.ओ., लखनऊ

# हिंदी की समरसता

तप्त हृदय को शीतल कर दे,
वह भाषा-विज्ञान है हिंदी।
भाव-विभोर मनुज को कर दे,
वह अविरल,अविराम है हिंदी।
घर-आंगन सावन की बूंदें,
खेत और खलिहान है हिंदी।
सरसों के खेतों में सुंदर,
पीतरंग परिधान है हिंदी।
गुलशन की झुरमुट बेलों में,
सुंदर कली समान है हिंदी।
रात चांदनी चमक रही है,
चातक की मुस्कान है हिंदी।
भगत सिंह आज़ाद की बोली,
प्रेमचंद की जान है हिंदी।
तिलक, जवाहर, बोस की भाषा,
गांधी की पहचान हिंदी।
तुलसी-सूर-कबीर की साखी,
मीरा का विषपान है हिंदी।
भाषा की सरिताओं में,
गंगा नदी समान है हिंदी।
भारत मां के भाल सुशोभित,
अमिट सुधारस पान है हिंदी।
भारत मां की आन है हिंदी,
नील गगन की शान है हिंदी।

श्री दशरथ यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, फैजाबाद कैंट

# कविता हूँ मैं

(राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में काव्य (कविता) का महत्त्व सर्वोपरि है. मानव मन-मस्तिष्क की भावनाओं के प्रकटीकरण का सशक्त माध्यम काव्य सृजन है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से 'कविता' को समझने का प्रयास किया गया है।)

कविता.... तुम ऐसी क्यों हो?

कैसे कैसे भाव जगाती!
कभी हंसाती, कभी रुलाती
खुद से तो कभी कुछ न कहती
लेकिन हमसे सब कहलाती।

कविता.... तुम ऐसी क्यों हो?
अपने शब्दों की ऊर्जा से
कैसे-कैसे बाण चलाती
किसी को विस्मित, किसी को विचलित
किसी के दृगों में नीर ले आती

कविता.... तुम ऐसी क्यों हो ?
कभी तरंगिणी-सी इठलाती
कभी पवन सी लय में बहती
कभी हिमालय की ऊंचाई-सी
कभी महासागर-सी गहरी।
कविता.... तुम ऐसी क्यों हो ?

अपनी शब्द-रचना से
कैसे मोहपाश में बांधा
अलंकारों के युग्म से कैसे
हृदय के अंतर्तम में झाँका

कविता.... तुम ऐसी क्यों हो ?
कविता बोली.... क्या कहते हो ?
क्या तुम्हें नहीं मालूम मैं क्या हूँ?

मैं 'निराला' की सरोज हूँ
'नीरज' की मैं प्रेम पुकार
'दिनकर' का साहस हूँ मैं
और 'मैथिली' का 'साकेत' विहार
'तुलसी' की 'मानस' में मैं हूँ
जिससे हुआ भक्तिमय संसार

मेरी लय ने न जाने कितने संगीत बनाए
मेरे भाव रसों ने कितनों के संताप हटाए
कितने ही युद्धों में वीर छंदों ने नए परिणाम बनाए
कितने ही गीतों ने राष्ट्र चेतना के बिगुल बजाए

भाषा की शान हूँ मैं
भाषा की पहचान हूँ मैं
भाषा के विकास के क्रम में
प्रथम सोपान हूँ मैं

कविता हूँ मैं.... हाँ...कविता हूँ मैं

श्री अमित कुमार पाण्डेय
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, अलीगंज (द्वितीय पाली), लखनऊ

# निज भाषा से ज्ञान बढ़े है, निज भाषा से मान

निज भाषा से ज्ञान बढ़े है, निज भाषा से मान

हिंद से हिंदी, हिंदी से हिंद

गुलशन में गुलजार है हिंदी

हम सब का अभिमान है हिंदी

भूत-भविष्य वर्तमान है हिंदी

ज्ञान का भण्डार है हिंदी

देशप्रेम में बसती है हिंदी

आत्मचेतना में रहती है हिंदी

भाव में हिंदी, प्रेम में हिंदी

बलिदानियों के गुणगान में है हिंदी

हिंदी भाषा को अपनाओ

निज ज्ञान का भण्डार बढ़ाओ।

श्रीमती साधना

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कला शिक्षा)

केन्द्रीय विद्यालय, शेखूपुर, बदायूँ

# हिंदी – भारत की बिंदी

जो भारत माता के माथे की बिंदी है,
वो अपनी प्यारी-न्यारी भाषा हिन्दी है।
जो हिंदू-मुस्लिम,सिक्ख-ईसाई सिंधी है,
उन सबकी प्यारी-न्यारी भाषा हिन्दी है॥
जो भारत माता के माथे की बिंदी है,
वो अपनी प्यारी-न्यारी भाषा हिन्दी है।
इस भाषा ने सबको जागृत संस्कार दिए,
कर ज्ञान-तृषा-परिपूर्ण महत् उपकार किए।
अध्यात्म-सुधा-रस भरित नदी कालिंदी है,
वो अपनी प्यारी-न्यारी भाषा हिन्दी है।
जो भारत माता के माथे की बिंदी है,
वो अपनी प्यारी-न्यारी भाषा हिन्दी है।
हिन्दी ने हर हिंदुस्तानी को अपनाया,
हो राष्ट्रभाव निजधर्म सभी को सिखलाया।
यह विश्वरूप, रस-भरित सदा बहुरंगी है,
अपने प्यारी न्यारी भाषा हिन्दी है॥
जो भारत माता के माथे की बिंदी है,
वो अपनी प्यारी-न्यारी भाषा हिन्दी है॥

श्री रमन प्रकाश सिंह
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल बी..के.टी., लखनऊ

# राजभाषा

हिंदी ही हमारी राजभाषा, हिंदी ही हमारी शान है।
हिंदी ही हृदय में बसती है, हिंदी ही हिंदुस्तान है॥

हिंदी ही वाणी का श्रृंगार, हिंदी ही तो आधार है।
हिंदी ही शब्द भंडार है, हिंदी ही से तो प्यार है॥

हिंदी ही मृदुलता का सार, हिंदी ममता का दुलार है।
हिंदी ही पथ प्रदर्शक है, हिंदी ही शीतल बयार है॥

हिंदी ही गांव-गांव फैली, हिंदी ही शहर की गरिमा है।
हिंदी ही राष्ट्र प्रतिनिधि है, हिंदी ही तो अरुणिमा है॥

हिंदी ही गद्य-पद्य रंगती, हिंदी ही पुस्तक की जान है।
हिंदी शोभा ग्रंथालय की, हिंदी पे हमें अभिमान है॥

हिंदी से ही चलचित्र जगत, हिंदी से ही संवाद है।
हिंदी लेखक की प्राण वायु, हिंदी ही  जिंदाबाद है॥

हिंदी से गति कार्यालय की, हिंदी विभाग की ज्योति है।
हिंदी उत्तमता का प्रतीक, हिंदी सागर का मोती है॥

हिंदी ही बचपन की भाषा, हिंदी ही किशोरावस्था है।
हिंदी ही तरंग युवावस्था की, हिंदी ही प्रौढ़ावस्था है॥

हिंदी ही सैनिक का साहस, हिंदी मातृभूमि का रूप है।
हिंदी से ही कीर्ति भारत की, हिंदी की छटा अनूप है॥

हिंदी ही एकता का प्रतीक, हिंदी से ही समरसता है।
हिंदी संविधान की प्रत्याशा है, हिंदी में भारत बसता है॥

श्री मनीष कुमार मिश्र
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय, बलरामपुर

# हिंदी

तुलसी की भक्ति का भाव लिया, कभी सूर से प्रेमभरी बानी।
कृष्ण का रूप समाए हुए, कभी मीरा बनी प्रेम दीवानी।।
विरहव्यथा घनानंद की, तो कभी ठाकुर जैसी प्रेम कहानी।
रस से भरी है बिहारी की बिंदी, कभी कवि भूषण का असि पानी।।

पोषित है रसखान रहीम से, विश्व में कीर्ति अपार बनी है।
आलम से अभिनंदित वंदित, जायसी का उपहार बनी है।।
वाणी प्रसिद्ध है संत कबीर की, सिद्धों के कष्ट का हार बनी है।
उक्ति का वैभव सार बनी कभी, भक्ति का, मुक्ति का द्वार बनी है।।

चंद्र के छंदों का ओज बनी कभी, जगनिक की असि धार बनी है।
माधुरी रंग रंगे पद सूर के, रसिकों का भाव-विभाव बनी है।
जायसी की रत साधना बीच ये, प्रेम का उर-सत्कार बनी है।
विद्यापति के पदों की छटा संग, मंजुल गंग की धार बनी है।।

अश्रु प्रसाद की आंख का है कभी, पंत का मौन निमंत्रण भी है।
पौरुष शक्ति निराला के राम की, भक्ति भरा अभिमंत्रण भी है।।
विरहाकुल महादेवी की पीड़ा के, अंतस का रिसता प्रण भी है।
जौहर है कुरुक्षेत्र प्रचंड है, लक्ष्मीबाई का ये प्रण भी है।।

स्थूलता त्याग के सूक्ष्म गयी बन, है अद्भुत अनबूझ पहेली।
मानवता की पुजारी बनी कभी, कल्पना की बनी इष्ट सहेली।।
बिंबों प्रतीकों का मोह नवीन ले शोषित मानव के संग खेली।
चित्रित भाव विचित्र पवित्र है सत्य ये हिंदी बड़ी अलबेली।।

डॉ० आलोक कुमार अवस्थी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल बी.के.टी., लखनऊ

# धरती का स्वर्ग-पुस्तकालय

पुस्तकालय है, एक ज्ञानरूपी गंगा,
जिसमें सर्वत्र बहता ज्ञान ही ज्ञान है।

पुस्तकें हैं आत्मा इसकी,
पुस्तकों से ही इसकी पहचान है।

पुस्तकालय है एक ज्ञानरूपी गंगा,
जिसमें सर्वत्र बहता ज्ञान ही ज्ञान है।

हर धर्म का है सम्मान यहाँ,
ग्रंथ का ये खजाना है, गीता, बाइबिल और कुरान,
गुरूग्रन्थ साहिब का गुरूद्वारा है।

कोई रोक नहीं, कोई टोक नहीं,
हर व्यक्ति यहाँ एक समान है।

ज्ञानियों का ज्ञान यहाँ, महापुरूषों के विचार हैं।
जितना चाहो, इस ज्ञान रूपी गंगा से, ज्ञान का उपयोग करो,
ये एक ऐसा महासागर है, जिसका न कोई पार है।

पुस्तकालय है, एक ज्ञानरूपी गंगा,
जिसमें सर्वत्र बहता ज्ञान ही ज्ञान है।

पुस्तकों का संगम है ये, नित नया ज्ञान बतलाती है,
कराती है ये मनोरंजन,
तो दुनियां की सैर भीं कराती है।

इस धरती का ये स्वर्ग है,
इससे उत्तम नहीं कोई स्थान है।

पुस्तक का आलय है ये,
पुस्तक+आलय, पुस्तकालय इसका नाम है।

पुस्तकालय है, एक ज्ञानरूपी गंगा,
जिसमें सर्वत्र बहता ज्ञान ही ज्ञान है।

श्रीमती प्रतिमा शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय, अलीगंज (द्वितीय पाली), लखनऊ

# पर्यावरण हमारा है

सोचो यदि पेड़ न होते, तो क्या तुम जी पाते?
कहाँ से तुम आक्सीजन लेते, कहाँ से फल खा पाते?

कहाँ पर पक्षी कलरव करते, कहाँ पर घर बनाते?
बाग-बगीचे कुछ न होते, कहाँ से लकड़ी लाते?
सुंदर-सुंदर ख़ुशबू वाले, फूल कहाँ से पाते?
कहाँ से तुम औषधियाँ लेते, कहाँ से घर बनवाते?
सोचो यदि पेड़ न होते, तो क्या तुम जी पाते?
कहाँ से तुम आक्सीजन लेते, कहाँ से फल खा पाते?

प्रकृति का सुंदर खेल देखिए, बीज से पौधे बन जाते,
पौधे-पौधे जोड़-जोड़ कर, सुंदर उपवन लहराते,
सुंदर उपवन देख-देख कर अपने मन को हर्षाते,
जग में यदि उपवन न होते, तो सावन कैसे लाते?
सोचो यदि पेड़ न होते, तो क्या तुम जी पाते?
कहाँ से तुम आक्सीजन लेते, कहाँ से फल खा पाते?

पेड़ ही हैं जो इस धरती को हरा-भरा बनाते,
शस्यश्यामला वसुंधरा को जिसके कारण हम पाते,
पेड़ ही हैं जो कड़ी धूप में, शीतल छाया देते।
जिसके नीचे बैठ के हम सब, चैन की साँसें लेते,
सोचो यदि पेड़ न होते, तो क्या तुम जी पाते?
कहाँ से तुम आक्सीजन लेते, कहाँ से फल खा पाते?

याद करो इस धरती पर, हरित क्रांति क्यों लाते?
पर्यावरण हमारा है, तो क्यों प्रदूषण हम फैलाते?
इसीलिए कहता हूँ यारों, एक ही पेड़ लगा दो,
धरती माँ के आँचल को, तुम हरा-भरा बना दो,
भूमि तुम्हारी पेड़ तुम्हारे, इन सबको अपना लो,
धरती को उर्वर बना के अपना कर्तव्य निभा लो।

श्री चन्द्र प्रकाश तिवारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, ए.एम.सी. (प्रथम पाली), लखनऊ

# विद्यार्थियों से एक गुज़ारिश

गर्मी की छुट्टियों में,खूब मौज मना रहे होंगे आप,
दोस्तों के साथ ऑनलाइन हल्ला-गुल्ला मचा रहे होंगे आप,

गृह कार्य में मम्मी की मदद ले रहे होंगे आप,
परियोजना-कार्य दीदी से करवा रहे होंगे आप,

छुट्टियों में दादी-नानी के घर भी गए होंगे आप,
सभी रिश्तेदारों से मिलकर खुश हुए होंगे आप,

मगर मेरी एक गुज़ारिश भी मान लें आप,
कृपया इसे अपने दिल में उतार लें आप,

प्यारी माँ की सेवा करना भी न भूलें आप,
नित मदद का एक कार्य जरूर करें आप,

पिताजी के कंधों का सहारा भी बनें आप,
थके पिताजी के पैर भी कभी दबा दें आप,

विद्यार्थियों! एक शिक्षक की बात को गांठ बांध लें आप,
मां-पिता के आशीर्वाद से ही विशेष बनेंगे आप।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्री प्रमोद कुमार

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)

केन्द्रीय विद्यालय, उन्नाव

# तुम्हें प्रणाम

अरुणोदय होते ही उठ जाते,
मधुर बेला में श्रमसाधक,
नाम हरि सुमिर हलधर बैल लिए जाते,
बटिया पर पैर धर राह नापते जाते,
जब यह दुनिया सो रही होती अपने-अपने धाम,
भोर के प्रथम पथिक तुम्हें प्रणाम!

कर्मरत भाव से खेत में हल चलाते,
फेरी पर फेरी लगाते मानो माला-सी बनाते,
अपने ही पद मंज़िल तय करते तमाम,
भोर के प्रथम पथिक तुम्हें प्रणाम!

अपने ही बाहुबल से उगाते हैं कंचन,
औरों के पेट भर कर स्वयं रहते अकिंचन,
धूप वर्षा ठंड तक में अपना तज आराम,
श्रम साधना मान अपना करते काम,
थके हारे न हारे कब हुई शाम,
हे अन्नदाता! तुम्हें प्रणाम!

शस्य श्यामला के कर्णधार,
तुमने ही आभूषण दिए अपार,
वसुंधरा दुल्हन बनती कर जिनका श्रृंगार,
धन्य मेरे लाल सहयात्री बन तुम चलते रहे अविराम,
कर्मरत साथी तुम्हें प्रणाम!

कभी सूखा कभी बाढ़,
करते रहे हैं खिलवाड़,
सादा जीवन जीने वाले हो तुम बड़े महान,
तुम सच्चे देवता हो ईश्वर के नाम,
जग के सुपालक तुम्हें प्रणाम!

श्री जैन प्रकाश
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, शेखूपुर, बदायूँ

# रण

(संदर्भ- महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने अपने समक्ष अपने सगे-संबंधियों को देखकर युद्ध करने से इंकार किया, तो भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें कर्म का जो पाठ पढ़ाया, उसे ही इस कविता के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।)

जीवित नहीं, वो मृतक है;
जिसने लिया न कोई प्रण है।
क्या जानता नहीं है तू?
क्या मानता नहीं है तू?
ये जीवन एक रण है,
ये जीवन एक रण है।

क्यों निःशस्त्र है खड़ा हुआ?
क्यों पस्त है पड़ा हुआ?
क्यों मुख है छिपा रहा?
क्यों आंसू बहा रहा?
तेरे मन में जो भ्रम है,
तेरे दुःख का वो कारण है,
क्या जानता नहीं है तू?
क्या मानता नहीं है तू?
ये जीवन एक रण है,
ये जीवन एक रण है।

तू सिंह है, दहाड़ कर;
उठा शस्त्र तू, प्रहार कर;
शत्रुओं का रक्त से,
धरा का रंग तू लाल कर;
दिखा दे तू, बता दे तू,
तुझे प्रण अपना स्मरण है,
क्या जानता नहीं है तू?
क्या मानता नहीं है तू?
ये जीवन एक रण है,
ये जीवन एक रण है।

श्री जय किशन कुशवाहा
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय, शेखूपुर, बदायूं

# हिंदी का विकास – एक संस्मरण

केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा आयोजित मुख्याध्यापकों हेतु सेवा कालीन प्रशिक्षण शिविर में इस वर्ष मुझे प्रतिभाग करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह प्रशिक्षण शिविर केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर में आयोजित किया गया था। बारह दिनों तक चलने वाले इस शिविर को लेकर मैं बहुत ही उत्साहित था क्योंकि यह मेरा पहला प्रशिक्षण था, जो आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर में आयोजित हो रहा था। बस एक ही शंका मन-मस्तिष्क को उद्वेलित कर रही थी कि दक्षिण भारत, जहाँ हिंदी का प्रचार-प्रसार कम है, कहीं मुझे भाषायी दिक्कतों का सामना तो नहीं करना पड़ेगा? मन में तरह-तरह के विचारों के साथ मैंने अपनी यात्रा शुरू की। बेंगलुरु विमानपत्तन से आरक्षित वाहन द्वारा मैं केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मैसूर पहुंचा। रात्रिकालीन भोज के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि इस प्रशिक्षण शिविर में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के विभिन्न संभागों- लखनऊ, हैदराबाद, चेन्नई, जयपुर, दिल्ली, भोपाल, रायपुर, तिनसुकिया एवं रांची से मुख्याध्यापक पधारे थे। अगले दिन प्रातः काल से ही हमारा प्रशिक्षण शिविर आरम्भ होना था। सत्र के आरम्भ में ही शिविर निदेशक एवं उपायुक्त डॉ. एन बसंत की ओजस्वी वाणी में हिंदी में दिए गए अभिभाषण ने मेरे मन-मस्तिष्क से इस भ्रम को दूर कर दिया था कि मुझे इस प्रशिक्षण के दौरान कोई भाषायी दिक्कत होगी। सत्र आरंभ हो चुका था, आश्चर्य की बात कि पूरे प्रशिक्षण शिविर में ऐसे सत्रों का प्रावधान किया गया था कि हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के विकास को भी बल प्राप्त होता रहे। शिविर सह निदेशक श्री हरि शंकर जी ने अपने प्रथम व्याख्यान के दौरान कविता शिक्षण की ऐसी-ऐसी विधियों एवं क्रिया-कलापों को प्रस्तुत किया कि मन बरबस ही प्रफुल्लित हो उठा। हिंदी की एक कविता को पढ़ाने के दौरान हम कौन-कौन से क्रिया-कलाप कर सकते हैं, इस बात का बखूबी वर्णन किया। हमारे संसाधक श्री मधुसूदन जी एवं श्रीमती अमुथा जे. ने विभिन्न सत्रों के दौरान हिंदी के प्रयोग पर बल देते हुए इसके उत्थान हेतु हमें कृत संकल्पित किया। शिविर के दौरान हमें बताया गया कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसके द्वारा हम पूरे भारत वर्ष को एक सूत्र में बांधे रख सकते हैं। विभिन्न संभागों से आए मुख्याध्यापकों एवं प्रशिक्षण शिविर के संसाधकों ने यह माना कि जगह-जगह पर अलग-अलग भाषाएं होने के कारण उच्चारण दोष हो सकते हैं, परंतु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि उसे सुधारा नहीं जा सकता। सच में, केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर में इस समय एक छोटा भारतवर्ष अंगड़ाई ले रहा था, जो हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं शुद्धता के लिए प्रतिबद्ध था।

प्रतिदिन प्रशिक्षण के उपरांत मैं अपने मित्रों राम बहादुर शर्मा, कमलेश कुमार एवं जुगिन्द्रो के साथ बाज़ार का विचरण किया करता था। बाज़ार विचरण के दौरान मैसूर के मूल निवासियों से वार्ता करने पर भाषायी दिक्कत का एहसास हुआ। परंतु हम लोगों ने हिम्मत नहीं हारी, हम सब इच्छित वस्तु को इंगित कर सामने वाले को उसका नाम हिंदी में बताते और उनसे उनका सटीक उच्चारण करवाते। हमें यह देखकर सुखद अनुभूति होती एवं सामने वाले के चेहरे पर प्रसन्नता एवं गर्व मिश्रित भाव आ जाते कि आज उसने अमुक वस्तु का नाम हिंदी में जाना।

प्रशिक्षण के दौरान शैक्षिक भ्रमण में हम सभी चामुंडी पर्वतमाला, मैसूर पैलेस एवं वृंदावन गार्डन गए। वहां भी हम सबने अपना यह सुखद प्रयोग जारी रखा, शायद यह कहीं मन को संतोष प्रदान करता था कि हमने हिंदी के विकास में अपना योगदान दिया। वास्तव में केन्द्रीय विद्यालय संगठन में ही ऐसे अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

श्री अरुणेश वैश्य
मुख्याध्यापक
केन्द्रीय विद्यालय, गोमतीनगर (प्रथम पाली), लखनऊ

# हिंदी

हिंदी भावों की भाषा है
जन-जन की अभिलाषा है ॥

गद्य-पद्य में सजा हुआ
अनोखा समृद्ध साहित्य है।
समाज का दर्पण बना
सजा हुआ लालित्य है॥

कबीर वाणी बनी कभी
बनी कभी मानस कथा।
बन मीरा के भजन ये
हर लेती मन की व्यथा॥

नीर भरी बदली महादेवी की
जयशंकर के आंसू बन छलकी।
चतुर चितेरे पंत प्रकृति के
वीर कलम दिनकर की चलती॥

चमक उठी तलवार लक्ष्मी की
सुभद्रा ने जब कलम चलाई।
राष्ट्र-प्रेम की अलख दिलों में
मैथिली शरण ने खूब जलाई॥

जीवन दर्शन बन कर छलकी
बच्चन की प्यारी मधुशाला।
होरी-धनिया की पीड़ा को
प्रेमचंद ने कह डाला॥

मिलकर सब कंठों से गूंजे
जन-गण-मन का गान।
सरल-सहज भाषा हिंदी पर
है हम सबको अभिमान॥

श्रीमती साधना कुमारी सचान
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, क्र.1अर्मापुर, कानपुर

## पुस्तक मेरी प्यारी मित्र

सुंदर सुंदर इसमें चित्र
ज्ञान भरती ज्ञान लुटाती
सबके मन को यह है भाती
बिन बोले सब कुछ कह जाती
नहीं किसी का दिल है दुखाती
मोटी है या पतली है
ज्ञान में बिलकुल असली है
चित्र हैं इसके प्यारे-प्यारे
शब्द हैं इसके न्यारे-न्यारे
परियों की कथा हमें सुनाती
बाँह पसारे हमें बुलाती
नहीं कभी कुछ लेती
हर पल हमको देती
रोज इसे हम पढ़ते हैं
सबसे अच्छे बनते हैं
पुस्तक मेरी प्यारी मित्र
सुंदर सुंदर इसमें चित्र

## मातृभाषा हिंदी

हिंदी हमारी भाषा
इससे हमारा नाता
इसको पढ़ेंगे हम
आगे बढ़ेंगे हम
हिंदी हमारी शान
हिंदी हमारा मान
हिंदी है सोच अपनी
हिंदी हमारा जहान
इसको लिखेंगे हम
इसको पढ़ेंगे हम
आगे बढ़ेंगे हम

श्रीमती मनोरमा मिश्रा
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, फ़ैज़ाबाद कैंट

# जश्ने-आज़ादी

जश्ने-आज़ादी की खातिर, अपनों ने सर कटा दिया,
करके जज्बातों को दफन, सिंदूर अपना मिटा दिया।

इस माँ की आजादी की खातिर, हर माँ की गोद सूनी हुई,
चिताएं भी जलती रहीं और क्रांति भी दूनी हुई।
जश्ने-आज़ादी की खातिर, हर खुशी को मिटा दिया,
कर के जज़्बातों को दफन, सिंदूर अपना मिटा दिया।

जश्ने-आज़ादी मना लो, पर ये न भूलो तुम सभी,
कतरा-कतरा बह चुका है, इस जश्न की खातिर कभी।
खून के बदले देश मिला है, हाथ पड़ी थीं हथकड़ियां।
आपस में ज़ंजीर न खींचो, कहीं टूट न जाए ये कड़ियां।

मैं मानवी यह बोल रही, ऐ मानव! तुम सब जाग उठो,
चुन लो अपना ध्येय सभी, प्रेम भाव से सभी बढ़ो।
पर ध्यान रहे इतना,
जश्ने-आज़ादी की खातिर, अपनों ने सर कटा दिया,
कर के जज़्बातों को दफन, सिंदूर अपना मिटा दिया।

श्रीमती मानवी अग्रवाल
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, क्र.2 जे.एल.ए., बरेली

# मां का बेटी के नाम खत

"मेरी प्यारी बेटी! जो तुम आंखें मूंदे सो रही हो,
मेरे हाथों पर मेरे वजूद से उपजी तेरी काया,
पर अपने अस्तित्व की तलाश तुम्हें स्वयं करनी है,
तुम्हारी जरूरतों को पूरा करना मेरी प्राथमिकता है,
पर अपनी प्राथमिकताएं तुम्हें स्वयं तय करनी है,
मैं नहीं जानती हूँ कि कल तुम क्या बनोगी,
स्वयं को तलाशती सबकी तरह एक भीड़,
या अपनी वास्तविकता के साथ एक सशक्त जिन्दा वजूद,
क्या पता भौतिकता में सुख तलाश करते,
जिंदगी की शाम तक पहुँच जाओ,
या पा जाओ शांति और सुकून वाला अपने आसमां का कोना,
स्त्री, पुरुष या अन्य पहचान से पहले,
काश...तुम चुन सको अपने अंदर के इंसान का होना,
और धर्मों और संप्रदायों में बंटी इस धरती पर,
तलाश सको एक ईश्वर को,
मैं तुम्हें कुछ नहीं समझाना चाहती,
बस मेरे साथ देखना इस संसार को,
अपनी समझ से बनाना सही-गलत के आधार को,
अंदर के राम को तुम्हें स्वयं ही ढूंढना है,
और अपने अंदर के रावण को भी स्वयं ही मारना है,
मैं बस हर हाल में तुम्हारे साथ रहूंगी,
बस इस उम्मीद के साथ कि....
इस दुनिया को तुम एक बेहतर जगह बनाओ,
वैसे, जैसे तुम्हारे आने से मेरा जीवन बेहतर बना।"

श्रीमती सुष्मिता सिंह
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, लखनऊ कैंट

# अशेष हो, विशेष हो

भेदभाव-पक्षपात से परे हो तुम
अशेष हो, विशेष हो।
भेदभाव-पक्षपात से परे हो तुम
अशेष हो, विशेष हो।।
जगत की शक्तियां हो तुम,
पुष्प पंक्तियां हो तुम,
अशेष हो, विशेष हो।
कलम का जिससे मान हो,
किताब का सम्मान हो,
अशेष हो, विशेष हो।
भेदभाव-पक्षपात से परे हो तुम,
अशेष हो, विशेष हो।।
कदम कभी रुके नहीं,
लक्ष्य से डिगे नहीं, उस रक्त का संचार हो,
अशेष हो, विशेष हो।
मां की ममता हो तुम,
पिता की क्षमता हो तुम,
और बुद्धि-संस्कार का मिला-जुला प्रवेश हो,
अशेष हो, विशेष हो।।
भेदभाव-पक्षपात से परे हो तुम,
अशेष हो, विशेष हो।।

श्री मनीष मिश्र
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, के.रि.पु.ब. (प्रथम पाली), लखनऊ

# शिखर की ओर

दिन की रोशनी में चलता चला जाऊंगा।

रात के अंधेरे में चलता चला जाऊंगा।

दिन में कोशिश होगी सूरज को पकड़ने की।

रात में कोशिश होगी तारों को पकड़ने की।

मैं हर रात के अंधेरे से दिन करता चला जाऊंगा।

मैं वो आग हूँ, जो देने की चाह में रोशनी।

जलता चला जाऊंगा, मै जलता चला जाऊंगा।

जिस दिन अपने आप को मौत के सामने खड़ा पाऊंगा,

हंसता चला जाऊंगा, मैं हंसता चला जाऊंगा।

मौत के बाद आसमान का सितारा बन जाऊंगा,

चमकता चला जाऊंगा, मैं चमकता चला जाऊंगा।

श्री आदित्य कुमार मिश्रा

प्राथमिक शिक्षक

केन्द्रीय विद्यालय, आर.आर.सी., फतेहगढ़

# अंगारों की धधकती आग

अंगारों  की धधकती आग हूँ मैं, ख्वाबों का उमड़ता सैलाब हूँ मैं।

किसी की बेटी किसी की बहू, न जाने कितने ही रिश्तों का आधार हूँ मैं।
अंगारों की धधकती आग हूँ मैं, ख्वाबों का उमड़ता सैलाब हूँ मैं।

किसी के सपनों का आगाज़ हूँ मैं, न जाने कितने ही लोगों का अभिमान हूँ मैं।
अंगारों की धधकती आग हूँ मैं, ख्वाबों का उमड़ता सैलाब हूँ मैं।

औरों के लिए खुद को भूलने की पहचान हूँ मैं, और न जाने कितने ही घरों की शान हूँ मैं।
अंगारों की धधकती आग हूँ मैं, ख्वाबों का उमड़ता सैलाब हूँ मैं।

हाँ! एक औरत हूँ मैं, हाँ! एक औरत हूँ मैं, सभी को अपने में समेटे आसमान हूँ मैं।
अंगारों की धधकती आग हूँ मैं, ख्वाबों का उमड़ता सैलाब हूँ मैं।

श्री विक्रांत यादव
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, शेखूपुर, बदायूं

# मान ले तू मेरी बात.....

मेरे अनुभव ने मुझे एक बात बताई,
जब मैंने खुद की खुद से बात करवाई।
क्या पाया तूने अपने गुजरे कल से?
जो आज तेरी छाया बन तेरा साथ दें।
कल सोचती थी आने वाला कल अच्छा होगा,
आज फिर सोचने लग गई कोई तो कल फिर से अच्छा होगा।
मान ले तू मेरी बात
नजरअंदाज़ न कर अपने आज को,
ख्वाहिशों के बोझ में क्या रखा है?
जो कल न था और कल न होगा, वह आज है।
पहचान खुद को एक योद्धा की तरह,
तेरा आत्मबल ही तेरे सिर का ताज है।
आंधी व तूफानों ने कभी बारिश का इंतज़ार नहीं किया,
फिर तू कौन से कल को खोजने में लगा है?
मान ले तू मेरी बात
नजरअंदाज़ न कर अपने आज को,
बीता कल तो बहुत उतार-चढ़ाव देकर जाता है,
और आने वाला कल तो सिर्फ उम्मीदों से दबाता है।
हे इंसान! तू कुदरत की वो रचना है,
जिसने कदम-कदम पर नया कर दिखाया है।
धरती से अंबर तक का सफर तूने,
अपने आज में रहकर ही पाया है।
मान ले तू मेरी बात
नजरअंदाज़ न करें अपने आज को

श्रीमती मनु
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, आर.आर.सी., फतेहगढ़

# हिंदी का उत्थान

निज भाषा हिंदी का करना है उत्थान
हिंदी का गौरवशाली इतिहास
देता है विश्व को ज्ञान का प्रकाश
हिंदी भाषा की मशाल बुझने नहीं देंगे हम
जन-जन में हिंदी के पुनरुत्थान की
अलख जगाएंगे
कबीरदास की सीधी-सादी हिंदी की पताका को
विश्व में फहराएंगे
झुकने नहीं देंगे हम ये
यही संकल्प हमारा है
हिंदी भाषा की डोर को मजबूत हाथों में पहुचाएंगे
बढ़ेगा और फैलेगा हमारे हिंदी साहित्य का मान

श्रीमती गरिमा श्रीवास्तव
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
केन्द्रीय विद्यालय, अलीगंज (द्वितीय पाली), लखनऊ

# मेरी भाषा हिंदी

मिसरी से भी मीठी
मेरी हिंदी भाषा है
विश्व में सम्मान मिले इसे
यही मेरी अभिलाषा है
सत्य वचन की देवी हिंदी
सर्वधर्म को जोड़ती है
केवल भाषा नहीं है हिंदी
हर भाव को शब्दों में पिरोती है
हिंदी का आओ मिलकर करें प्रचार
उठो युवाओं हिंदी का करें श्रृंगार
हिंदी के शब्द-स्वर-व्यंजन
हमारी अमिट पहचान हैं
हिंदी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है
सर्वश्रेष्ठ है हमारी हिंदी
इसका मान बढ़ाएंगे
और विकसित कर निज भाषा को
भारत की शान बनाएंगे।

सुश्री नेहा
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
केन्द्रीय विद्यालय, अलीगंज (प्रथम पाली), लखनऊ

# राजभाषा उपलब्धियां

## क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय उत्तर क्षेत्र-2 (उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड) "क" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले (11 से 50 कर्मिक वाले) कार्यालयों के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों की श्रेणी में केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ को वर्ष 2018-19 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों में  तृतीय स्थान एवं वर्ष 2019-20 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों में द्वितीय स्थान के लिए चुना गया। ये पुरस्कार दिनांक 27 नवंबर 2021 को माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ को कानपुर में प्रदान किए गए।

## केन्द्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली नराकास द्वारा पुरस्कृत

केन्द्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली को हिंदी भाषा के संवर्धन हेतु उत्तम कार्य करने तथा श्रेष्ठ राजभाषा पत्रिका 'रुचिरा' अंक-2 के लिए मुख्य आयकर आयुक्त और नराकास बरेली के अध्यक्ष श्री जयंत डिड्डी द्वारा 31 अगस्त 2022 को संपन्न हुई नराकास की बैठक में प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। प्राचार्य डॉ. अपर्णा सक्सेना तथा स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी) श्रीमती मीता गुप्ता ने ये पुरस्कार ग्रहण किए। इससे पूर्व भी नराकास द्वारा केन्द्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है। गत तीन वर्षों से केन्द्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली को हर छमाही के लिए निरंतर प्रथम और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त होता रहा है।

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय -1) द्वारा केन्द्रीय विद्यालय गोमतीनगर को प्रदत्त पुरस्कार

केन्द्रीय विद्यालय गोमतीनगर, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1) जिसका समन्वयक कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त उत्तर प्रदेश (पूर्वी) लखनऊ कार्यालय है, के अंतर्गत एक पंजीकृत कार्यालय है।

वर्ष 2021 की प्रथम छमाही (जनवरी से जून 2021) में विद्यालय पत्रिका को नराकास द्वारा प्रथम पुरस्कार से नवाज़ा गया। वर्ष 2022 की प्रथम छमाही (जनवरी से जून 2022) में भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए केन्द्रीय विद्यालय गोमतीनगर को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

## केन्द्रीय विद्यालय फैजाबाद कैंट

केन्द्रीय विद्यालय फैजाबाद कैंट राजभाषा के क्षेत्र में लगातार बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अयोध्या की ओर से सत्र 2021-22 के लिए विद्यालय को राजभाषा शील्ड से पुरस्कृत किया गया, जिसमें उसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में विद्यालय के दो शिक्षकों को भी पुरस्कार प्राप्त हुए। विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती किरण मिश्रा को हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ; जबकि विद्यालय के शिक्षक श्री रजत कुमार को शब्द संग्राम प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

## केन्द्रीय विद्यालय आई.वी.आर.आई., बरेली- उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बरेली की छमाही बैठक आयकर आयुक्त कार्यालय बरेली के सभागार में दिनांक 31.08.2022 को संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता नराकास अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त बरेली श्री जयंत डिड्डी द्वारा की गई। कार्यक्रम के अन्य गणमान्य अतिथियों में श्री संजय सिन्हा, पोस्ट मास्टर जनरल बरेली एवं ब्रिगेडियर गौरव शर्मा (जूनियर लीडर्स अकादमी बरेली), उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बरेली नराकास के 55 कार्यालयों द्वारा प्रतिभागिता की गई। बैठक में केन्द्रीय विद्यालय आई.वी.आर.आई. बरेली को 01 जनवरी 2022 – 30 जून 2022 छमाही में राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु पुरस्कार प्रदान किया गया।

## केन्द्रीय विद्यालय इफको आंवला, बरेली- हिंदी में उल्लेखनीय कार्य

केन्द्रीय विद्यालय इफको आंवला बरेली को राजभाषा हिंदी में उल्लेखनीय कार्यों के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली द्वारा वर्ष 2021-22 की प्रथम छमाही (जनवरी से जून )में प्रथम पुरस्कार और द्वितीय छमाही (जुलाई से दिसंबर) में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विद्यालय में प्राचार्य श्री राजेश कुमार वत्स ने इस पुरस्कार को बरेली आयकर विभाग के प्रमुख श्री जयंत डिड्डी के कर कमलों से दिनांक 31/08/2022 को प्राप्त किया। विद्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार को प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। यह पुरस्कार विद्यालय के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, कार्यालय कर्मियों और प्राचार्य के योजनाबद्ध तथा निष्ठापूर्वक किए गए कार्यों का परिणाम है।

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, (राजभाषा विभाग)
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली।
प्रशस्ति-पत्र

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजस्व विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति -2, कानपुर
(कार्यालय, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, कानपुर)
प्रमाण-पत्र
प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी राधे श्याम, प्र.स्ना.शिक्षक
कार्यालय केन्द्रीय विद्यालय -1, चकेरी, कानपुर ने नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति-2, कानपुर द्वारा दिनांक 23.09.2021 को आयोजित हिन्दी
निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर रू 3000/- का नगद पुरस्कार
प्राप्त किया।
( शिशिर झा )
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष
नगर रा.भा. कार्यान्वयन समिति-2, कानपुर
स्थान : कानपुर
दिनांक : 24.11.2021

## केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, वायुसेना स्थल चकेरी, कानपुर उपलब्धि

केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, वायुसेना स्थल चकेरी, कानपुर के प्रतिभाशाली शिक्षक श्री राधेश्याम, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी) ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-2 कानपुर द्वारा दिनांक 23/09/2021 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता में विद्यालय की ओर से प्रतिभाग किया और प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवांवित किया। उन्हें दिनांक 24/11/2021 को आयोजित समारोह में प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, कानपुर एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति -2 कानपुर के अध्यक्ष श्री शिशिर झा द्वारा अपने करकमलों से प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। हम उनके उज्ज्वल एवं सुखद भविष्य की मंगलकामना करते हुए बधाई देते हैं।